तित्थयर

॥ जैन भवन ॥

बर्द्धमान महावीर माता त्रिशला की गोद में

महावीर जन्म कल्याणक विशेषांक

वर्ष : २७ अंक : १ अप्रैल २००३

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant

Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office

143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office

2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

महावीर जयन्ती विशेषांक

वर्ष - २७ | अंक - १, अप्रैल | २००३

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये

पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

Phone : 2268-2655, e-mail : jbhawan@cal3.vsnl.net.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —

Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007

Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,

for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,

Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655 and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन

श्रीमती लता बोथरा

॥ जैन भवन ॥

Jainology and Prakrit Research Institute

Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007.

Phone-2268-2655. e-mail - jbhawan@cal3.vsnl.net.in.

अनुक्रमणिका

क्र. सं. लेख	लेखक	पृ. सं.
१. आत्मदर्शन-एक आलोकपात (जैन एवं जैनेतर परिप्रेक्ष्य में)		५
२. समाचार सार		५१
३. संकलन		६४

कवरपृष्ठ : स्वर्गीय हीराचन्द दूगड़ द्वारा चित्रित एवं श्री जयन्त दूगड़ के सहयोग से प्राप्त चित्र में भगवान् महावीर माता त्रिशला की गोद में।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

सम्पादकीय

आत्म दर्शन के क्षेत्र में जैन दर्शन की अपनी विशिष्ट विचारधारा है। प्रत्येक आत्मा की स्वतन्त्र सत्ता एवं परमात्मता जैन दर्शन मानता है। बन्ध और मोक्ष की अवधारणा भी जैन दर्शन की अपनी मौलिक है। कर्मों का बन्ध आत्मा के साथ अनादिकाल से क्यों है और इन कर्मों से कैसे छुटकारा मिल कर आत्मा परमात्म अवस्था को किस प्रकार प्राप्त करता है इसकी जितनी विशद् विवेचना जैन दर्शन में मिलती है वैसी अन्य किसी दर्शन में नहीं की गयी है। आत्मा चैतन्य स्वरूप है। कर्मों के कारण जीव विभिन्न शरीर धारण करता है और चार गतियों और ८४ लाख योनियों में अनन्तकाल से भ्रमण करता हुआ चला आ रहा है। वर्तमान में जो स्थिति हमें प्राप्त है उसका कारण जन्म जन्मान्तर का कर्म बन्ध है। इन कर्म बन्धनों को क्षय करने का कार्य आत्मा अपने पुरुषार्थ से करता है। जैन दर्शन में ज्ञान को आत्मा का विशिष्ट गुण बताया गया है। मति, श्रुत, अवधि और मनपर्याय ज्ञान सभी को हो सकता है लेकिन केवलज्ञान उन विशिष्ट आत्माओं को ही होता है जो अपने कर्मों को पूर्ण रूप से क्षय कर लेते हैं। केवल ज्ञानियों ने जगत के सूक्ष्म से सूक्ष्म पदार्थ का वैज्ञानिक विश्लेषण कर उनके रहस्यों को उद्घाटित किया जैसे कि उन्होंने बताया कि वनस्पति भी हमारी तरह सुख-दुःख का संवेदन करती है। इसी को प्रमाणित कर जगदीश चन्द्र बोस ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। पाश्चात्य जगत को आश्चर्य चकित करने वाली इस खोज से जैन जगत का अशिक्षित व्यक्ति भी परिचित है। वनस्पति में जीव का अस्तित्व है और हमारे स्पर्श से उसे दुःख होता है यह

बात आज से लगभग २६०० वर्ष पूर्व भगवान् महावीर ने बताई थी तथा जैन कुल में उत्पन्न बालक को यह ज्ञान जन्म घुट्टी में ही प्राप्त हो जाता है। जैन दर्शनं सिर्फ वनस्पतिकाय में ही नहीं वरन् मिट्टी, जल, वायु, अग्नि सभी में जीव मानता है। यद्यपि अन्य दर्शनों में भी इसका वर्णन मिलता है लेकिन चेतना के आधार पर एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय और त्रस-स्थावर जीवों से वर्गीकरण का सूक्ष्म विवेचन जैन शास्त्रों में ही उपलब्ध है। अतः यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि बिना किसी बाह्य सामग्री के सिर्फ आत्म शुद्धि एवं ज्ञान की शक्तिद्वारा तीर्थंकरों और श्रुत केवलियों ने लोक कल्याण के लिये जो तत्व चिन्तन विश्व को दिया वह आज के वैज्ञानिकों को भी स्वीकार करना पड़ रहा है।

प्रस्तुत विशेषांक में जैन और जैनेतर दर्शन के परिप्रेक्ष्य में आत्मतत्व चिन्तन पर एक आलोकपात करने का प्रयास किया गया है। मैं चाहती हूँ कि हमारे पाठक वर्ग इस शोध निबन्ध पर अपने विचारों से हमें अवगत करायें। श्री दिलीपसिंह जी नाहटा, प्रो. सत्यरंजन बनर्जी, श्री विनोदचन्द बोथरा एवं समस्त ट्रस्टीगणों के प्रेरणा व सहयोग से यह सारस्वत प्रयास विशेषांक का आकार ले पाया है। श्री अभिजीत भट्टाचार्य, श्रीमती माला वैद एवं जैन भवन के सभी कार्य कर्त्ताओं की मैं आभारी हूँ जिनका मुझे पूर्ण सहयोग मिला।

लता बोथरा

आत्मदर्शन

एक आलोकपात

(जैन एवं जैनेतर दर्शन के परिप्रेक्ष्य में)

भारतवर्ष अपने आध्यात्मिक दर्शन के कारण ही संसार में श्रद्धा और सम्मान की दृष्टि से देखा जाता रहा है। यही एक ऐसा देश है जहाँ अति प्राचीन काल से ही मनुष्य को स्वतन्त्र विचार रखने की स्वतन्त्रता का अधिकार प्राप्त था। जीवन के प्रत्येक कार्य में धर्म का कठोर नियन्त्रण होने पर भी विचारों की स्वतन्त्रता के कारण ही भारत में इतने दर्शन और मत मतान्तर पनप सके। एक बार डा. भाभा से एक पत्रकार ने प्रश्न किया कि आपके देश की सबसे बड़ी उपलब्धि क्या है। डा. भाभा ने उत्तर देते हुए कहा था कि यहां का किसान वर्ष में छः महीने खेती करता है और छः महीने चिंतन करता है। यही चिंतन ही विश्व को भारत की सबसे बड़ी देन है।

"सा प्रथमा विश्ववारा" यजुर्वेद में संस्कृति के प्रथम भारतवर्ष में आविष्कृत होने के पश्चात् विश्वव्यापी बनने की बात कही गयी है। ऐतिहासिक खोज भी इसे एक सर्वमान्य तथ्य के रूप में स्वीकार करती है। सुप्रसिद्ध पाश्चात्य मनीषी तथा भारतीय विद्याओं के ज्ञाता **सर विलियम जोन्स** के शब्दों में "भारत वह महान देश है जो दूर-दूर तक एशियाई देशों से घिरा है जिसे विज्ञान की धरती होने का गौरव प्राप्त है, जो मानवीय प्रतिभा की उत्पत्ति का स्थान है, जो धर्म, रीति रिवाजों, विविध भाषाओं और मनुष्यों के विविध वर्गों का अटूट भण्डार है।" भारतीय दर्शन का एक मात्र लक्ष्य श्रेष्ठतम की प्राप्ति है। यही कारण है कि भारत ने मात्र अपनी सम्पन्नता के कारण नहीं

वरन् अपनी आध्यात्मिक चेतना के कारण विश्व को प्रभावित किया है। **जर्मन विद्वान जोहान हर्डर** ने कहा भी है कि 'मनुष्य जाति के उद्गम की खोज भारत में की जानी चाहिये।' प्रसिद्ध विद्वान **मैक्समूलर** ने अपनी किताब **'Sacred books of the East'** में लिखा है— 'भारत मेरे सपनों का देश है। यहाँ के सांस्कृतिक अन्वेषण ने विश्व मानव को उसके देवत्व एवं दिव्यत्व की राह दिखायी।'

भारतीय संस्कृति का ध्येय है सर्वांगीण विकास। यह संस्कृति ज्ञानमय है, संग्राहक है, कर्ममय है क्योंकि यह हमारे ऋषि मुनियों के चिन्तन का परिणाम है। भारत को विश्व की संस्कृतियों का जनक माना गया है। पुराणों में भी इसी सन्दर्भ में अनेक उल्लेख प्राप्त होते हैं।

जरा-मृत्यु-भयं नास्ति धर्मा-धर्मा युगादिकम्।
ना धर्म माध्यमं तुल्या हिमादेशात्तु नाभितः।।
ऋषभो मरुदेव्यां च ऋषभाद् भरतोऽभक्त।
ऋषभोऽदात् श्री पुत्रे शाल्य ग्रामे हरिगतः।।
भरताद् भारतवर्ष भरतात् सुमतिस्त्वभूत।।

(अग्निपुराण १०।१० - ११)

उस हिमवत् प्रदेश (भारतवर्ष को पहले हिमवत् प्रदेश कहते थे) में जरा और मृत्यु का भय नहीं था। धर्म और अधर्म भी नहीं थे उनमें मध्यम समभाव था। वहाँ नाभि राजा से मरुदेवी ने ऋषभ को जन्म दिया। ऋषभ से भरत हुए, ऋषभ ने भरत को राज्य प्रदान कर सन्यास ले लिया। भरत से इस देश का नाम भारतवर्ष हुआ। भरत का पुत्र सुमति (सुयश) था। इसी तरह के उल्लेख मार्कण्डेय पुराण (५०।३९।४२) वायुपुराण (३०।५०।५३) लिंग पुराण, शिवपुराण, स्कन्दपुराण, भागवतपुराण आदि में पाये जाते हैं। जैन व वैदिक दर्शन दोनों में संस्कृति का आदि जनक ऋषभदेव को माना गया है। तत्पश्चात् धीरे-

धीरे कालक्रमानुसार इसमें से अनेक मतों का जन्म हुआ। इन सब मतों के आधार पर आज भारतीय दर्शन को दो भागों में वर्गीकरण किया जाता है। आस्तिक और नास्तिक। सांख्य, योग, वैशेषिक, न्याय, मीमांसा और वेदान्त ये सब आस्तिक मत माने गये है तथा जैन, बौद्ध और चार्वाक नास्तिक मत । परन्तु यह वर्गीकरण उचित नहीं हैं क्योंकि इसके अनुसार जो वेद वचनों पर विश्वास नहीं करता वो नास्तिक माना गया है। जो ईश्वर की सत्ता को नहीं स्वीकारता वह नास्तिक है। इस प्रकार सांख्य, योग और वैशेषिक दर्शन भी नास्तिक दर्शन हैं क्योंकि ये भी ईश्वर की सत्ता को नहीं स्वीकारते अतः यह वर्गीकरण ठीक नहीं हुआ है।

यह कहा जाता है कि जैन और बौद्ध धर्म ईश्वरीय सत्ता को नहीं मानते। शून्य से अचानक विश्व का सर्जन नहीं होता है। आचार्य जिनसेन ने इसे स्पष्ट करते हुए कहा है कि यदि ईश्वर स्वयं सम्पूर्ण है तो विश्व रचना की क्यों जरूरत पड़ी ? यदि ईश्वर दयावान है तो सुख दुःख क्यों बनाए है ? जीव-अजीवमय यह विश्व अनादि से चलता आ रहा है तथा इसका मूल काल, स्वभाव, नियति कर्म तथा पुरुषार्थ में ही समाया हुआ है प्रत्येक व्यक्ति अपने भाग्य का विधाता स्वयं है, प्रत्येक चेतन आत्मा के लिये मोक्ष का ध्येय बनाता है। और उस शाश्वत सुख को प्राप्त करने के साधन रूप आत्म विकास की सर्वोकृष्ट स्थिति में पहुँचने तक के समय के लिये सर्वोच्च त्याग आवश्यक है।

आचार्य कुन्दकुन्द ने पंचस्तिकायसार में तथा उत्तराध्ययन सूत्र के २०वें अध्ययन में उल्लिखित है कि **'आत्मा ही अपने कर्मों का कर्त्ता और भोक्ता है।'** अर्थात् जो जैसा करता है वैसा ही भरता है। अपने सुख-दुःख का उत्तरदायी आत्मा स्वयं है इसको स्पष्ट करने के

लिये जैन शास्त्र में एक प्रसंग है। मगध के राजा श्रेणिक भ्रमण के लिये मण्डी कुक्षी नामक उद्यान में जाते है वहाँ एक वृक्ष के नीचे एक सुकुमार तरुण युवक को ध्यान में मग्न देख कर राजा को आश्चर्य होता है वह उसको नमन करके उनसे पूछते है कि 'आप तरुण है फिर आप प्रव्रजित क्यों हो गये यह तो संसार के सुख भोगने का समय है।' इस पर युवा मुनि ने कहा 'मैं अनाथ हूँ मेरा कोई नाथ नहीं, स्वामी नहीं है इसीलिये मैने यह मुनि जीवन स्वीकार किया है।' राजा को कौतूहल हुआ कि इतने सुन्दर सौंदर्यशाली पुरुष का कोई भी नाथ नहीं यह तो अचरज की बात है। तब उन्होंने मुनि को कहा 'आपका नाथ बनना मैं स्वीकार करता हूँ मेरे परिवारिक जन मेरे मित्र यह सब आपका परिवार होगा। आप अकेले नहीं रहेंगे, उनके संग रहे और सांसारिक सुख को भोगे।' मुनि ने कहा "राजन् तुम तो स्वयं अनाथ हो तथा अनाथ दूसरे का नाथ कैसे बनेगा।?" राजा ने कहा-'मुनिवर मैं अनाथ कैसे हूँ, मेरे पास तो अपार वैभव, राज्य, परिवार, सेना सब कुछ है । सब मेरे आदेश का पालन करते है, फिर आप मुझे अनाथ कैसे कह रहे है?"

इस पर मुनि बोले– "मैं कौशम्बी नगरी का हूँ मेरे पिता का नाम प्रभूतधन संचय है। एक बार मेरे नेत्रों में पीड़ा उत्पन्न हुई जो असह्य थी। बड़े-बड़े वैद्य तान्त्रिक सबने इलाज किया लेकिन मेरी वेदना को ठीक न कर सके। मेरे परिवारजन जितना भी कर सकते थे उन्होंने किया फिर भी मेरी पीड़ा को दूर नहीं कर सके। तब मैंने सोचा, मैं कितना बेसहारा हूँ कोई भी मुझे इस भीषण वेदना से नहीं बचा पा रहा है। वास्तव में मैं अनाथ हूँ तब मैंने विचार किया यदि इस वेदना से मुक्त हो जाऊँगा तो संयम ग्रहण कर लूँगा। ऐसा विचार करते-करते मुझे नींद आ गई और प्रातःकाल जब मैं उठा तो मैंने स्वयं को पीड़ा मुक्त पाया।

परिवारजनों को समझा बुझा कर दीक्षा की स्वीकृति प्राप्त कर श्रमण जीवन स्वीकार किया। मैंने अपनी आत्मा को संयम में ढाल कर आत्मनियन्त्रण कर लिया, इसलिये मैं अपना नाथ हूँ। अपने कर्मों का कर्त्ता भी मैं ही हूँ और भोक्ता भी मैं ही हूँ।"

मैंने हिंसा का त्याग किया है अतः त्रस, स्थावर किसी भी प्राणी को मुझसे भय नहीं इसलिये मैं सबका नाथ हूं अर्थात् आत्मा ही अपना नाथ है आत्मा ही नदी है, आत्मा ही कूट शाल्मली कडुआ सेमल का पेड़ है (कष्टकर है) आत्मा ही कामधेनु है—सब अभीप्साएँ पूर्ण करने वाली, आत्मा ही नन्दन वन, स्वर्ग का उद्यान है-आनन्दप्रद है, आत्मा ही सुख-दुःख की कर्त्ता है, आत्मा ही विकर्त्ता है—कर्मों का क्षय नाश करने वाली है, दुष्प्रवृत्तियों में संलग्न आत्मा अपना शत्रु है तथा सत्यवृत्तियों में संलग्न आत्मा अपना मित्र है।

'अप्पा नई वेयरणी, अप्पा में कूडसामली।
अप्पा काम दुहा धेणू, अप्पा में नंदणं वणं।।
अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाणय।
अप्पा मित्तममित्त च, दुप्पट्ठिय सुपट्ठिओ।।'

उत्तराध्ययन सूत्र २०-३६, ३०

यह सुन श्रेणिक ने हाथ जोड़कर कहा, 'हे मुनिवर अनाथता का सच्चा स्वरूप आपने मुझे अच्छी तरह समझाया है। आपका मनुष्य जन्म सफल है क्योंकि आपने इसका लाभ उठाया है। आप ही वास्तव में सनाथ और सबान्धव है, अनाथों के नाथ है।

विश्व के सभी दर्शनों में आत्मा सम्बन्धी चिन्तन परिलक्षित होता है। यद्यपि सभी प्रचलित दर्शन आत्मा के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं लेकिन उसकी व्याख्या अलग-अलग रूपों में करते है। न्याय और वैशेषिक आत्मा को अविनश्वर और नित्य मानते हैं। इच्छा, द्वेष, प्रयत्न,

सुख-दुःख व ज्ञान को आत्मा का विशेष गुण मानते हैं। मीमांसा दर्शन भी आत्मा को नित्य मानता है। अद्वैत वेदान्त दर्शन आत्मा को सत्, चित्त एवं आनन्द स्वरूप मानता है तथा एक ही आत्मा को सत्य मानता है। सांख्य दर्शन पुरुषों को मानता है लेकिन ईश्वर को नहीं मानता है। चार्वाक दर्शन आत्मा की सत्ता को स्वीकार नहीं करता है। उसमें चैतन्य युक्त शरीर को ही आत्मा माना गया है। बौद्ध दर्शन आत्मा को ज्ञान, अनुभूति और संकल्पों का प्रत्येक क्षण में परिवर्तन होने वाला पदार्थ मानता है। जैन दर्शन में आत्मा को नित्य, अजर-अमर माना गया है। ज्ञान आत्मा का विशिष्ट गुण है । आत्मा अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख और अनन्त शक्ति से युक्त है।

जैन आगम ग्रन्थों में द्वादशांगी में बारह आगमों में दूसरा सूत्रकृतांग है जिसमें स्वसिद्धान्त द्वारा निरूपण करते हुए अनेक मतों का विस्तृत उल्लेख मिलता है।

चार्वाक दर्शन—ये पंच महाभूतों पृथ्वी, जल, वायु, तेज, आकाश के अतिरिक्त आत्मा को अलग पदार्थ नहीं मानते हैं। इन पंच महाभूतों से ही आत्मा उत्पन्न होती है व विनाश से ही आत्मा का विनाश होता है।

"एते पंच महब्भूया, तेब्भो एगो त्ति आहिया।
अह तेसिं विणासे णं, विणासो होइ देहिणो।। सूत्रकृताग १/८।।

दीघनिकाय के ब्रह्मजालसुत्त में भी ऐसे चातुर्भौतिकवाद का वर्णन मिलता है जो आत्मा को चार महाभूतों-पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु से निर्मित मानते हैं और इनके अनुसार शरीर के विनष्ट होते ही चेतना भी विनष्ट और लुप्त हो जाती है। लेकिन इन पंचभूतों के संयोग से चैतन्यादि गुण उत्पन्न नहीं हो सकते क्योंकि पंचभूतों का गुण चैतन्य नहीं है। जैसे बालू में तेल उत्पन्न नहीं हो सकता उसी प्रकार पंचभूतों में चैतन्य उत्पन्न नहीं हो सकता है। इसी तरह मिट्टी के पुतले में पंचभूत

विद्यमान रहने से भी उसमें चैतन्य (आस्था) नहीं प्रकट होती है। अतः चैतन्य आत्मा का गुण है जो पंचभूतों से भिन्न है।

"एक एव हि भूतात्मा, भूते-भूते व्यवस्थितः।
एकधा बहुधा चैव दृश्यते जलचन्द्रवत।।"

(कठोप० २/५/१०)

कठोपनिषद् में कहा है — जैसे एक ही चन्द्रमा जल से भरे हुए विभिन्न घड़ों में अनेक दिखायी देता है, वैसे ही सारे भूतों में रहा हुआ एक ही (भूत) आत्मा उपाधि भेद में अनेक प्रकार का दिखायी देता है। यह एकात्मवादी मान्यता वेदान्त दर्शन सम्मत है। यह सारे विश्व में एक ही आत्मा मानते है जो युक्तिहीन है क्योंकि ऐसा मानने से एक के द्वारा किये गये शुभ या अशुभ कर्म का फल दूसरे सभी को भोगना पड़ेगा। एक के कर्मयुक्त होने पर सभी कर्म बन्धन से बन्ध और एक के कर्म मुक्त होने से सभी कर्म मुक्त हो जाएँगे। जड़ और चेतन में सभी में एक आत्मा मानने से आत्मा का चैतन्य गुण जड़ में भी आ जायेगा जो असम्भव है।

आत्मानम् रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धि तु सारथि विद्धि मनः प्रगहमेव च।।

(कठोपनिषद)

कठोपनिषद में नचिकेता को यमराज ने आत्मज्ञान का पाठ पढ़ाया। जिसमें उसने ब्रह्म का अनुभव कर अमरता प्राप्त की, यमराज ने नचिकेता को बताया था कि आत्मा शरीर रूपी रथ का स्वामी है, बुद्धि सारथि है और मन लगाम।

बौद्ध दर्शन में पदार्थ की उत्पत्ति के पश्चात् तत्काल ही निष्कारण विनाश होना माना जाता है। बौद्ध दर्शन में पाँच स्कन्ध माने गये हैं

(१) रूप स्कन्ध (२) वेदना स्कन्ध (३) संज्ञा स्कन्ध (४) संस्कार स्कन्ध और (५) विज्ञान स्कन्ध। इन पाँचों को उपादान स्कन्ध भी कहा गया है। इन पाँचों से भिन्न या अभिन्न सुख-दुख, इच्छा, द्वेष, ज्ञानादि आदि का आधारभूत आत्मा नाम का कोई पदार्थ नहीं है। ये पाँचों स्कन्ध क्षणयोगी हैं दूसरे ही क्षण समूल नष्ट हो जाते हैं। बौद्धों के क्षणिकवाद के अनुसार पदार्थ मात्र, आत्मा या दान सभी क्रियाएँ क्षणिक है। पंच स्कन्धों से अतिरिक्त आत्मा नामक कोई पदार्थ नहीं है तो जब आत्मा नहीं है तो बन्ध, मोक्ष, जन्म मरण, स्वर्ग नरक सब निरर्थक हो जाते हैं।

नैव स्त्री न पुमानेष न चैवायं नंपुसक।
यद् यच्छरीर गादते तेन तेन स पुज्यत।।

(श्वेताश्वतरोपनिषद्)

श्वेताश्वरोपनिषद् सूत्र में आत्मा के विषय में बताया है कि आत्मा न तो स्त्री है, न पुरुष और न ही नपुंसक। यह शरीर से सम्बन्धित है और यह शरीर में यत्र-तत्र सर्वत्र व्याप्त है।

अद्वैत वेदान्त के अनुसार आत्मा एक है, सच्चिदानन्द है, नित्य और स्वप्रकाश चैतन्य है। यह न तो ज्ञाता है न ज्ञेय और न अहम् ही। द्वैत मतानुसार आत्मा केवल चैतन्य नहीं है बल्कि एक ज्ञाता है। **"ज्ञाता अहमर्थ एवात्मा"**

मनुस्मृति में भी सब ज्ञानों से श्रेष्ठ आत्म ज्ञान बताया है—
मनुस्मति में—सर्वेषामपि चैतेषा, मात्म ज्ञान परं स्मृतम्
तद्वयभ्रमं सर्व विद्यानां, प्राप्तते ह्यमृत ततः।

मनुस्मृति (अध्याय - १२)

सब ज्ञानों में श्रेष्ठ ज्ञान आत्म ज्ञान है जिससे मनुष्य को अमृत मिलता है।

भगवद्गीता में लिखा है– "जिस प्रकार हम जीर्ण वस्त्रों को त्याग कर नवीन वस्त्र धारण करते है उसी प्रकार आत्मा नवीन शरीर धारण करता है। आत्मा को न कोई शस्त्र छेद सकता है, न अग्नि जला सकती है और न ही हवा शोष सकती है।"

"वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृहणाति नरोऽपराणि
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्य
न्यानि संयाति नवानि देही।।"

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः
न चैनं क्लेदयन्त्यापी न शोषयाति मारुतः।।

(भगवद्गीता, द्वितीय अध्याय, श्लोक-२२,२३)

सांख्य दर्शनानुसार आत्मा स्वयंसिद्ध, अखण्ड, नित्य और सर्वव्यापी है, वह ज्ञान नहीं ज्ञाता है।

योग दर्शन आत्मा को सभी विकारों से अलग, अजन्मा और अमर मानता है। जो शरीर की मृत्यु के बाद भी कर्मफल भोगता है। प्रत्येक जीव में पृथक आत्मा है। सुषुप्तावस्था में तथा मोक्षावस्था में आत्मा चैतन्य रहित होती है। न्याय दर्शन में जब तक आत्मा शरीर में रहती है तब तक दुखों का पूर्ण विकास सम्भव नहीं है। आत्मा के शरीर से मुक्त होने पर ही दुःखों और सुखों का अन्त होता है।

वैशेषिक के अनुसार आत्मा एक ऐसा द्रव्य है जिसमें बुद्धि या ज्ञान सुख-दुःख, रागद्वेष, इच्छावृत्तियां, प्रयत्न आदि गुण के रूप में वर्तमान रहते हैं।

ये सभी मत सूत्रकृतांगसूत्र में वर्णित पंच महाभूतवाद, एकात्मवाद, तज्जीव तच्छरीवाद, आकारकवाद, आत्मषष्टवाद, क्षणिकवाद, नियतिवाद, अज्ञानवाद, कर्मोपचय निषेधक क्रियावाद आदि में समाहित

है। बौद्ध ग्रन्थों संयुक्तनिकाय तथा दीघनिकाय में भी विभिन्न मतों जैसे तज्जीव तच्छरीवाद, जीवान्य शरीरवाद, अनन्तवाद, सान्तवाद, शाश्वतवाद, अशाश्वतवाद, अकृततावाद, दैववाद, अक्रियवाद, उच्छेदवाद, नित्यत्व-अनित्यत्ववाद, अमराविक्षेपवाद अकारणवाद आत्मोच्छेदवाद, दृष्टनिर्वाणवाद का वर्णन मिलता है।

पाश्चात्य दर्शन में भी आत्मा सम्बन्धी चिन्तन प्राप्त होता है। सुकरात प्लेटो और अरस्तु भी आत्मा के पुनः जन्म में विश्वास रखते थे। अर्थात् वे आत्मा का अस्तित्व मृत्यु के बाद भी स्वीकार करते थे। प्लेटो के द्वन्दात्मक सिद्धान्त के अनुसार संसार के समस्त पदार्थ द्वन्दात्मक हैं अतः जीवन के बाद मृत्यु और मृत्यु के बाद जीवन अनिवार्य है। प्लेटो कहता है– "The soul always weaves her garment anew. The soul has a natural strength which will hold out and be born many times". आत्मा सदा अपने लिये नये-नये वस्त्र बुनता है तथा आत्मा में एक ऐसी नैसर्गिक शक्ति है जो ध्रुव रहेगी और अनेक बार जन्म लेगी। **रेने देकार्त ने लिखा है "मैं चिन्तन करता हूं इसमें मैं का अर्थ आत्मा है। आत्मा और प्रकृति एक दूसरे पर क्रिया और प्रतिक्रिया करते हैं।"**

स्पिनोजा के अनुसार प्रत्येक द्रव्य में अनन्त गुण है। हमारा ज्ञान दो गुणों तक सीमित है चेतन और विस्तार। चेतना के भी अनन्त रूप हैं और हर रूप आत्मा है। विस्तार के भी अनन्त रूप है और प्रत्येक रूप पदार्थ है। ये दोनों गुण सदा एक साथ मिलते है। ये एक ही द्रव्य के दो पक्ष है। **"लाइबनित्ज़ आत्मा को शरीर से पृथक कहीं विद्यमान नहीं मानते है। सिर्फ परमात्मा है जो शरीर से पृथक है।"**

लॉक के अनुसार "आत्मा प्रत्यक्ष ज्ञान का विषय है। मैं चिन्तन करता हूँ, मैं दुःख-सुख का अनुभव करता हूँ इससे अपनी सत्ता का अनुभव होता है और ज्ञान होता है अतः आत्मा ज्ञान का विषय है।" जार्ज बर्कले ने विश्व की सत्ता को तीन भागों में विभाजित किया है। (१) आत्मा और उनके बोध (२) परमात्मा (३) बाह्य पदार्थ। आत्मा का तत्व चिंतन है। ह्यूम ने आत्मा को भी प्रकृति की तरह एक कल्पना मात्र माना है।

हीगेल के अनुसार स्वाधीनता ही आत्मा का सार है। आत्मा का तत्व अपने आप में पर्याप्त होता है तथा आत्मा को स्वयं से संघर्ष करना पड़ता है। **नीत्शे** मानते हैं कि आत्मा पर अनेक बोझ हैं केवल शक्तिशाली आत्मा ही बोझ उठाने की क्षमता रखती है। **सर ऑलीवर लॉज के अनुसार 'The soul of man passes between death and rebirth in the world as he passes through dreams in the night'** अर्थात् 'मनुष्य जिस प्रकार स्वप्न लोक में भ्रमण करता है उसी प्रकार मनुष्य की आत्मा मृत्यु और पुनर्जन्म के बीच भ्रमण करती है।'

पाश्चात्य दर्शन में अहम् **self** को आत्मा का पर्याय माना गया है प्रसिद्ध अमेरिकी दार्शनिक **पाल वेस्स** के अनुसार 'किसी का अहम् वह बोध है जिससे वह स्वयं को समझता है।' (Modes of Being Pg-47-52) **डॉ० वैलेन्ड** ने **Elements of Intellectual Philosophy** में लिखा है 'जो मूल तत्व मस्तिष्क की शक्तियों की उत्पत्ति में सहायक होता है वही आत्मा है।' १९वीं शताब्दी के मनोवैज्ञानिक चिन्तक **William James** ने अपनी पुस्तक **'Principle of Psy-**

chology' लिखा है कि 'यदि मुझसे पूछा जाये कि आत्मा क्या है तो मैं तत्परता से जवाब दूँगा कि आत्मा जीवन का अस्तित्व है।'

जैन धर्म अनेकान्तवादी विचारधारा का प्रतिपादन करता है इसीलिये इन सभी एकात्मक विचारधाराओं के विपरीत आत्मा पर स्पष्ट और गहन चिन्तन हमें जैन दर्शन में प्राप्त होता है और उसका कारण सर्वज्ञ तीर्थंकरों द्वारा प्ररूपित दर्शन है जिन्होंने साधना द्वारा आत्मा के रहस्यों को जाना और समझा। सूत्रकृतांग के प्रथम सूत्र में **"बुज्झिज्ज तिउट्टेज्जा, बंद्यणंपरिजाणिय।"** अर्थात् मनुष्य को बोध प्राप्त करना चाहिये बंधन का स्वरूप जान उसे तोड़ना चाहिये। यह बोध क्या है, कौन सा है। यहाँ बोध का अर्थ है 'आत्म बोध' अर्थात् मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ। बन्धन रहित होते हुए भी कर्मों के बन्धन में कैसे और क्यों पड़ा हूँ, इन बन्धनों का कर्त्ता कौन है तथा इसे कैसे तोड़ा जा सकता है इन प्रश्नों का रहस्य समझकर उनको तोड़ने का पुरुषार्थ करना ही आत्मा का धर्म व कर्त्तव्य है।

संबुज्झह किं न बुज्झह, संबोही खलु पेच्च दुल्लहा
णो हूवणमंति रातिओ, णो सुलभंपुणरावि जीवियं ।।१।।

(सूत्रकृतांगसूत्र द्वितीय अध्ययन-८९)

इस सूत्र में – "हे भव्यो ! तुम बोध प्राप्त करो। बोध क्यों नहीं प्राप्त करते ? बीती बातें फिर लौट कर नहीं आती और संयमी जीवन फिर सुलभ नहीं है इसलिये सम्बोध प्राप्त करने में देर नहीं करना चाहिये। इसी जन्म में और अभी बोध प्राप्त कर लो क्यों कि बीता हुआ क्षण फिर लौट कर नहीं आता है।

आचारांग सूत्र (श्रु १. अ. १ सू. १) के प्रथम सूत्र में भी आत्मा से सम्बन्धित बोध का समर्थन मिलता है।

अत्थि मे आया उववाइए? णत्थि मे आया उववाइए?

के अहं आसी, के वा इओ चुओ इह पेच्चा भविस्सामि?

'मैं यानि मेरा आत्मा भिन्न-भिन्न गतियों में उत्पन्न होने वाला है अथवा मेरा आत्मा भिन्न-भिन्न गतिओं में उत्पन्न होने वाला नहीं हैं। तथा मैं कौन था और इस शरीर से छूट कर इस संसार में दूसरे जन्म में क्या होऊँगा' ? आगे लिखा है—

से जं पुण जाणेज्जा सह सम्मइयाए परवागरणेणं अएणेसिं वा अंतिए सोच्चा तंजहा :–

पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहंमसि जाव

अएणयरीओ दिसाओ अणुदिसाओ वा आगओ अहमंसि

एवमेगेसिं जं णायं भवइ–अत्थि मे आया उववाइए,

जो इमाओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा अणुसंचरइसोहं।।४।।

से आयावाई लोयावाई कम्मावाई किरियावाई।।५।।

वह पुरुष अपनी बुद्धि या जातिस्मरण ज्ञान द्वारा या तीर्थंकरों के उपदेश से अथवा दूसरों के पास से सुनकर पूर्वोक्त बातों को जान लेता है जैसे कि 'मैं' यानि मेरी आत्मा पूर्व दिशा से आयी है अथवा यावत् अन्यतर अर्थात् किसी एक दिशा से अथवा अनुदिशा से आयी है । इस प्रकार कितने ही जीवों को ज्ञान हो जाता है कि मेरी आत्मा नाना गतियों में भ्रमण करने वाली है। जो आत्मा इन दिशाओं से अथवा अनुदिशाओं में आकर संसार में परिभ्रमण करता है अपने पूर्व जन्मादि का स्मरण करता है वही आत्मा मैं हूँ। जो पुरुष आत्मा के उपर्युक्त स्वरूप को जानता है वही आत्मवादी है, वही लोकवादी अर्थात् लोक को यर्थाथरूप से जाननेवाला है, वही कर्मवादी अर्थात् कर्मों का यथार्थ स्वरूप जानने वाला है और क्रियावादी यानि कर्मबन्ध के कारणभूत क्रिया जानने वाला है।

आचारांग सूत्र में आत्मा के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि "जो आत्मा है वह विज्ञाता है और जो विज्ञाता है वही आत्मा है।' यहाँ 'मैं' शब्द स्पष्टरूप से आत्मा के लिये प्रयुक्त है । 'मैं' का अर्थ देह नहीं वरन् देह के अन्दर विराजमान चैतन्यमय आत्मा है जो नाना गतियों में भ्रमण करता है। जिस प्रकार तलवार और म्यान अलग-अलग है, जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को छोड़कर नये वस्त्र धारण करता है वैसे ही आत्मा पुराने शरीर को छोड़कर नया शरीर धारण करती है।

वादिदेव सूरि कृत 'प्रमाणनयतत्वालोक' नामक न्यायग्रन्थ के सातवें परिच्छेद के ५६वें सूत्र में आत्मा की सटीक परिभाषा मिलती है।

'चैतन्य स्वरूपः परिणामी, कर्त्ता, साक्षात्भोक्ता,
स्वदेह परिणामः प्रतिक्षेत्रं भिन्नः पौद्गलिकादृष्टवाश्चाऽयम्।।'

इस सूत्र में आत्मा को चैतन्य स्वरूप वाला, परिणामी (नयी-नयी योनियों में, भिन्न-भिन्न गतियों में भ्रमण करने के कारण, भिन्न अवस्थाओं में भी परिवर्तनशील होने के कारण परिणाम स्वभाव वाला) कर्त्ता और साक्षात् भोक्ता, स्वदेह परिमाण के विशेषण से आत्मा को सर्वत्र व्याप्त मानने वाले, प्रत्येक शरीर में भिन्न आत्मा (प्रतिक्षेत्र) एवं पौद्गलिक द्रव्य रूप उदृष्ट वाला माना गया है।

जैन दर्शन में पदार्थ या वस्तु के चिन्तन के अलावा सर्वोच्च स्थान आत्म चिन्तन को दिया गया है। द्वन्द्व के मूल में वस्तुनिष्ठता नहीं आत्मनिष्ठता ही मानी गयी है। आत्मा ही अपना मित्र और शत्रु दोनों है। आत्मा चाहे तो अपना उद्धार करे अथवा पतन। कोई वस्तुनिष्ठ बाह्य सत्ता इसके लिये उत्तरदायी नहीं है। आचारांगसूत्र में स्पष्ट कहा है-

'पुरिसा! तुममेव मित्तं किं बहिया मित्त मिच्छसि'

"हे पुरुष ! तू स्वयं ही अपना अपना मित्र है फिर तू अपने (आत्म स्वरूप) से बाहर मित्र कहाँ ढूँढ़ता है"? उत्तराध्ययन सूत्र के

२३वें अध्याय में केशी मुनि गणधर गौतम स्वामी से पूछते हैं कि हे गौतम ! आप शत्रु किसे समझते हैं? उत्तर में गौतम स्वामी कहते हैं -

'एगप्पा अजिए सत्तु, कसाया इंदियाणि य।
ते जिणिता जहानायं, विहरामि अहं मुणी' ।।

(उत्तराध्ययन-२३/३८)

'हे मुनि, एक निरंकुश आत्मा ही शत्रु है और इन्द्रियां तथा कषाय शत्रु रूप है । उन्हें न्यायपूर्वक जीतकर मैं विचार रहा हूँ।'

'अप्पाण जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ,
अप्पाणमेव अप्पाणं, जस्ता सुहमेहए।।'

अपनी आत्मा के साथ ही युद्ध करो बाहरी शत्रु के साथ युद्ध करने से क्या लाभ? आत्मा के द्वारा आत्मा को जीतने वाला ही वास्तव में पूर्ण सुखी होता है।

आत्मा अनादि काल से इस संसार में कर्मानुसार चार गतियों और चौरासी लाख जीव योनियों में परिभ्रमण करता रहता है । ये ८४ लाख योनियाँ इस प्रकार है :-

७ लाख	पृथ्वीकाय
७ लाख	अपकाय
७ लाख	तेउकाय
७ लाख	वायुकाय
१० लाख	प्रत्येक वनस्पतिकाय
१४ लाख	साधारण वनस्पतिकाय
२ लाख	द्विन्द्रिय
२ लाख	तेईन्द्रिय
२ लाख	चउरिन्द्रिय

४ लाख	देवता
४ लाख	नारकी
४ लाख	तिर्यंच
१४ लाख	मनुष्य
८४ लाख	योनि

इस परिभ्रमण का अन्त तभी होता है जब आत्मा मुक्ति प्राप्त कर लेता है। परन्तु प्रश्न यह है कि आत्मा जब दिखती नहीं है तो उसे हम कैसे माने ? आत्मा कोई वस्तु या ठोस पदार्थ नहीं है जिसे हाथ से छुआ जा सके। जिस प्रकार हवा को देखा नहीं जा सकता लेकिन उसके कार्य द्वारा उसका अस्तित्व जान सकते हैं जैसे वृक्ष के पत्ते हिलना। जो चीज दिखायी नहीं देती लेकिन उसके कार्यों द्वारा उसके अस्तित्व का पता चलता है। मनुष्य की मृत्यु होने पर उसका शरीर ज्यों का त्यों रहता है। वह कुछ नहीं कर सकता उसके सारे क्रियाकलाप बन्द हो जाते है क्यों कि उसके सारे क्रियाकलाप आत्मा द्वारा होते थे। यही चेतनावस्था आत्मा के अस्तित्व का प्रमाण है।

उपनिषदों की बहुश्रुत श्रुति "पूर्णमदः पूर्णमिदम्" में चेतना का स्वरूप बोध है। चेतना वह हो या यह, ईश्वरीय हो या मानवीय सभी अपने रूपों में पूर्ण होती है। आज फोटोग्राफी तकनीक बहुत ही विकसित हो चुकी है। होलोग्राम त्रिआयामी तकनीक लेजर किरणों से बनती है। यदि हम एक फल का होलोग्राफ लें और फिर उस फिल्म के दो या अधिक से अधिक टुकड़े कर दें तब भी प्रत्येक टुकड़े में सम्पूर्ण फल का चित्र उभरेगा। विज्ञान मनीषी **स्टेनले आरडीन** ने इस होलोग्राफिक सिद्धान्त का साम्य भारत के ऋषियों के उस आध्यात्मिक चिन्तन से किया है जिसमें जीवन पदार्थो के कण-कण में चेतना की सम्पूर्णता व

अखंडता साफ-साफ दीखती है। **प्रो. जे. ए. ऐशबी** ने अपनी किताब **Holographic Models of Consciousness)** (चेतना के बहुआयामी रूप) में लिखा है कि 'पहेलियों जैसी लगने वाली उपनिषदों की श्रुतियाँ वास्तव में भारत के प्राचीन ऋषियों के गहन प्रयोगात्मक निष्कर्ष हैं। उन्होंने चेतना के बारे में हजारों साल पहले जो तथ्य उजागर किये थे वो होलोग्राफिक सिद्धान्तों के वैज्ञानिक उजाले में प्रमाणित होने लगे है।' जैन दर्शन में **"चैतन्यो लक्षणों जीव"** कहा गया है अर्थात् जहाँ चैतन्य दिखाई दे वहाँ जीव या आत्मा का अस्तित्व होता है। आत्मा का अनुभव स्पर्श गन्ध, रूप और शब्द से परे है इसलिये इन्द्रियों द्वारा भी आत्मा का अनुभव नहीं किया जा सकता। जीव है और वह शरीर से भिन्न है तो उसके क्या लक्षण हैं ? यह उत्तराध्ययन सूत्र की इस श्लोक से स्पष्ट होता है—

'नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा,
वीरियं उवओगो य, एयं जीवस्स लक्खणं।।'

अर्थात् **'ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, वीर्य और उपयोग ये छः जीव के लक्षण हैं।'** जीव के सम्बन्ध में आचार्य हरिभद्र स्वामी ने षड्दर्शन समुच्चय में कहा है—

'तत्र ज्ञानादि धर्मेभ्यो भिन्ना भिन्न विवृतिमान,
कर्ता शुभाशुभं कर्म, भोक्ता कर्म फल तथा।।'

'यह जीव (आत्मा) ज्ञानादि धर्मों वाला है, भिन्न-अभिन्न का विवेचक है, शुभ-अशुभ कर्मों का कर्ता और कर्मों के फल का भोक्ता है, यह जीव चैतन्य लक्षण वाला है।'

आत्मा के अस्तित्व सम्बन्धी शंका का सुन्दर निवारण 'रायपसेणीयसुत्त' में वर्णित प्रदेशी राजा के प्रबन्ध से मिलता है। जो इस प्रकार है—

२३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की परम्परा में केशीकुमार श्रमण हुए। वे महातपस्वी, अवधि और मनः पर्याय ज्ञान से युक्त थे। एक बार श्रावस्ती नगरी में उनका आगमन हुआ वहाँ (सेवयविया) श्वेताम्बिका नगरी के राजा प्रदेशी का चित्र नाम का सारथी उनका प्रवचन सुनने आया। केशी मुनि का व्याख्यान सुनकर चित्र सारथी ने श्रावक धर्म ग्रहण किया और श्वेताम्बिका नगरी में पधारने की विनति की। कुछ समय पश्चात् आचार्य केशी अपने शिष्यों के साथ श्वेताम्बिका नगरी के उद्यान में पधारे। जब चित्र सारथी ने आचार्य के आगमन की खबर सुनी तो उसने जाकर मुनि महाराज की वंदना कर कहा – "हमारे महाराजा को धर्म मार्ग में प्रवृत्त करें क्योंकि उन्हें धर्म का ज्ञान नहीं है।" आचार्य ने कहा कि राजा को यहाँ लेकर आओ तभी यह कार्य सम्भव हो सकता है। तब एक दिन चित्र सारथी प्रभात में राजा को घोड़ो की परीक्षा कराने के बहाने घुमाने ले गया। लौटते समय उद्यान में जहाँ केशी मुनि थे वहाँ ले गया। राजा ने केशी मुनि को उपदेश देते सुनकर सारथी से पूछा – "यह कौन व्यक्ति है और यह गला फाड़कर लोगों को क्या समझा रहा है?" चित्र सारथी ने बताया कि ये अवधिज्ञान धारी केशी कुमार श्रमण है। राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने जाकर मुनि महाराज से पूछा क्या आप अवधिज्ञान धारी है। केशी मुनि ने राजा के अन्तर्मन में उठे विचारों को राजा को बताया जिसे सुनकर राजा की जिज्ञासा और भी बढ़ने लगी और उसने जीव के विषय में अपने संशयों को प्रकट किया। उसने कहा कि मैं मानता हूँ कि जीव और शरीर एक ही है क्योंकि मेरा दादा इस नगरी का राजा था वह अधार्मिक तथा प्रजा को कष्ट देने वाला था। उसका मुझपर बड़ा स्नेह था। यदि जीव और शरीर भिन्न है तो वह

नरक में गया है तो यहां आकर मुझे बताना चाहिये था कि अधर्म करने से नरक में जाना पड़ता है, भयंकर यातनाएं भोगनी पड़ती हैं । लेकिन वे मुझे यह बताने कभी भी नहीं आये अतः मेरी मान्यता है कि जीव और शरीर एक ही है मुझे सही प्रतीत होती है। इस पर केशी मुनि ने कहा– "हे राजा ! यदि तुम्हारी रानी के साथ कोई कामुक पुरुष असभ्यता करे तो तुम उसे क्या दण्ड दोगे"? राजा ने कहा "मैं उसे सूली पर चढ़ा दूंगा।" आचार्य ने कहा कि यदि अपराधी यह कहे कि 'हे राजा! थोड़ा ठहर जाओ जिससे मैं अपने साथियों और सम्बन्धियों को यह बता दूँ कि कभी ऐसा कृत्य मत करना क्यों कि इसकी सजा मृत्यु है। तो हे राजा! क्या तुम रूक जाओगे।' राजा ने कहा- "ऐसा नहीं हो सकता । मैं बिना बिलम्ब किये उसे सूली पर चढ़ा दूँगा।" तब आचार्य ने कहा कि 'इसी प्रकार तुम्हारा परदादा भी परतन्त्र होकर नारकीय दुःख भोग रहा है तो वह तुम्हें यहाँ कहने के लिये कैसे आ सकता है ? नरक में पहुँचा हुआ नया अपराधी मनुष्य लोक में आना तो चाहता है पर चार कारणों से नहीं आ सकता– प्रथम तो नरक की भयंकर वेदना उसे विह्वल कर देती है, दूसरे नरक के कठोर रक्षक उसे घड़ी भर के लिये भी बन्धन मुक्त नहीं करते, तीसरे वेदनीय कर्म का भोग पूरा नहीं होता, चौथे उसका आयुष्य पूरा किया नहीं होता इसलिये वह मनुष्य लोक में नहीं आ सकता। जिस प्रकार मरकर नरक में पड़ा हुआ प्राणी यहाँ नहीं आ सकता उसी प्रकार कोई स्वर्गिक सुखों को भोगता हुआ मनुष्य इस लोक में चार कारणों से आने में असमर्थ है। प्रथम, वह देव स्वर्ग के दिव्य सुखों में अत्यन्त लिप्त हो जाता है और मानवीय सुखों में उसकी रुचि नहीं रहती। दूसरे, उस देव का मनुष्य सम्बन्ध टूट कर देव-देवियों से जुड़े नये सम्बन्धों में लगा रहता है। तीसरे, देव सुखों

के कारण उसको काल व्यतीत होने का भास नहीं होता। हमारे हजारों वर्ष देवों के पल मात्र में बीत जाते हैं। चौथे-मनुष्य लोक की दुर्गन्ध देव सह नहीं सकता।'

जिस तरह छिद्र रहित कोठरी में से आवाज बाहर निकल सकती है वैसे ही छिद्र रहित कुम्भी से जीव भी बाहर निकल सकता है। अर्थात् धातु, पत्थर, पहाड़ आदि को भेद कर चले जाने का सामर्थ्य जीव में है इसलिये उसे कहीं भी बन्द कर दिया जाये, तब भी वह बाहर निकल सकता है। जैसे अरणी की लकड़ी में अग्नि रहती है लेकिन वह दिखायी नहीं देती इसी प्रकार शरीर में आत्मा है। इस प्रकार केशी कुमार श्रमण के इस उपदेश से प्रदेशी राजा की शंका का निवारण हो जाता है और उन्हें आत्मा के अस्तित्व का विश्वास हो जाता है।

भगवान् महावीर के प्रथम गणधर इन्द्रभूति और तृतीय गणधर वायुभूति को जिन शासन में आने के पूर्व जीव या आत्मा के सम्बन्ध में शंका थी। अपनी ख्याति और पांडित्य के कारण वे किसी के सम्मुख अपनी शंका नहीं जाहिर करते थे। जब वे भगवान् महावीर के समवसरण में गये तो भगवान् ने उनके नाम और गोत्र से उन्हें सम्बोधित कर पहले उनकी शंका बतायी और फिर उसका समाधान किया। इसका वर्णन विशेषावश्यक भाष्य सटीक (गाथा १५४९-१६०५, १६४५-१६८६) में उपलब्ध है।

आत्मा कभी भी जन्मी नहीं वह अनादि कहलाती है और कभी भी नाश को प्राप्त नहीं होती । वह अविनाशी या अमर कहलाती है। मूल द्रव्य की अपेक्षा से आत्मा को नित्य और पर्याय की अपेक्षा से आत्मा को अनित्य कहा जाता है। अनन्तज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त आनन्द ये आत्मा के गुण हैं। वह अरूपी है जिसका छेदन भेदन नहीं हो सकता, अग्नि द्वारा उसको जलाया नहीं जा सकता, पानी से भीगता

नहीं, हवा से सूखता नहीं है। जैसे सोना पहले मिट्टी में मिला होता है उसी प्रकार आत्मा अनादिकाल से कर्म में लिप्त है और उसका कर्मबन्धन प्रति समय चालू ही है।

आत्मा शरीर द्वारा क्रिया करता है और उसके संस्कार उस पर पड़ते है। श्री पन्नवण्य सूत्र में लिखा है– **"पंच सरीरा पणत्ता"** अर्थात पाँच प्रकार के शरीर होते है ।

(१) **औदारिक—** जो शरीर उत्कृष्ट पुद्‌गलों का बना होता है वह औदारिक कहलाता है।

(२) **वैक्रिय—** जिस शरीर में बड़ा छोटा, मोटा पतला तथा अनेक रूप धारण करने की क्षमता होती है वह वैक्रिय कहलाता है। देव और नारकियों को ऐसा शरीर प्राप्त होता है।

३. **आहारक—** तत्वार्थ सम्बन्धी शंका निवारण के लिये चौदह पूर्वधर मुनि केवलज्ञानी के पास जाने के लिये जिस एक हाथ प्रमाण शरीर धारण करते हैं वह आहारक कहलाता है। मनुष्य को यह शरीर लब्धि से प्राप्त होता है।

४. **तेजस—** जो शरीर खाये हुए आहार को पचाने में समर्थ है और तेजोमय तथा उष्मा देने वाला है वह तेजस कहलाता है।

५. **कार्माण्य—** जब आत्मा ज्ञानावरणीय आदि कर्मों से युक्त रहता है तो वह कार्माण्य शरीर कहलाता है।

जिस शरीर में आत्मा प्रवेश करता है वह शरीर वहाँ तैयार नहीं रहता है बल्कि वहाँ उत्पन्न होकर अपने कर्मानुसार देह की रचना करता है। जैन शास्त्र में देह रचना के लिये ६ पर्याप्ति का क्रम बतलाया गया है। (१) आहार पर्याप्ति (२) शरीर पर्याप्ति, (३) इन्द्रिय पर्याप्ति (४) श्वासोच्छ्‌वास पर्याप्ति (५) भाषा पर्याप्ति और (६) मन पर्याप्ति।

पूर्व स्थान पर अपनी देह छोड़ कर नयी आनुपूर्वी, गति, जाति

आदि नाम कर्म रूप कार्मण शरीर के अनुसार नवीन जन्म क्षेत्र में पहुँच कर स्वजाति योग्य देह धारण करने के लिये जीव जिस शक्ति द्वारा पुद्गल ग्रहण करता है उसे **आहार पर्याप्ति कहते है।**

आहार पर्याप्ति द्वारा ग्रहण किये हुए पुद्गल को धातु रूप में परिणत कर शरीर नाम और कर्म के अनुसार देह रचना में रूपान्तर करता है । इसी को **शरीर पर्याप्ति** कहते है । अर्थात् जीव पूर्व जन्म से कार्मण शरीर के समान तेजस शरीर भी साथ लाता है जिसके द्वारा आहार को पचाकर रस रुधिर रूप में वह शरीर का निर्माण करता है। इनमें से तेजस्वी पुद्गलों से इन्द्रिय बनाता है, जिसे **इन्द्रिय पर्याप्ति** कहते हैं। प्रतिक्षण आहार ग्रहण करने का , शरीर बढ़ाने का और इन्द्रियों को बना कर दृढ़ करने का काम जारी रहता है । अन्तमुहूर्त्त में शरीर और इन्द्रियाँ तैयार हो जाती है। तब श्वास के पुद्गल ग्रहण करं श्वासोच्छ्वास की शक्ति गृहित होती है। यही श्वासाच्छ्वास पर्याप्ति है। ऐकेन्द्रिय जीव को चार शक्तियों की ही पर्याप्ति होती है।

द्विन्द्रिय जीवों को रसना की भी प्राप्ति होती है अतः वे भाषण के पुद्गल धारण कर उन्हें भाषा रूप में परिणत करने की शक्ति प्राप्त करते हैं। यही **भाषा पर्याप्ति है।** संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव मन के पुद्गल लेकर उन्हें मन रूप में परिणत करते है जो **मन पर्याप्ति** कहलाती है। इस प्रकार आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास मन ये छः पर्याप्तियाँ पुद्गल के आधार पर उत्पन्न होती है। अतः यह मानना कि शरीर की रचना पहले होती है और आत्मा का उसमें प्रवेश बाद में होता है सही नहीं है। एक ही माता पिता से उत्पन्न होने वाली सन्तानों के शरीर, रूप, रंग आदि में बहुत अन्तर पाया जाता है अतः आत्मा देह का पर्याप्तियों द्वारा निर्माण करता है।

सभी जीवों का जन्म दो प्रकार से होता है।

(१) **गर्भज** – स्त्री-पुरुष के शुक्र और रज के मिलन से गर्भ में कुछ समय परिपक्व होने के बाद जिस चेतन अवयव का जन्म होता है उसे गर्भज प्राणी कहते है।

(२) **समुर्च्छिम**– स्त्री-पुरुष के संयोग के बिना शरीर के किसी रस से जन्म लेने वाले जीव को समुर्च्छिम जीव कहते हैं।

आत्मा का स्वरूप लक्षण समत्व (equanimity) है। भगवती सूत्र में गणधर गौतम स्वामी ने भगवान् महावीर के सम्मुख आत्मा सम्बन्धी दो प्रश्न किये। आत्मा क्या है और उसका साध्य क्या है? भगवान ने इनका उत्तर देते हुए कहा, 'आत्मा समत्व रूप है और समत्व की उपलब्धि कर लेना ही आत्मा का साध्य है।' आचारांग सूत्र में भी समता को धर्म कहा गया है क्योंकि वस्तु स्वभाव ही धर्म है और आत्मा का मूल स्वभाव समता है । अतः आत्मा का अपना मूल रूप प्राप्त करना ही उसका साध्य है। जैन दर्शन में साधक, साध्य और साधना तीनों ही आत्मा से अभिन्न है। आत्मा स्व को पूर्ण स्व ही बनाती है । इस प्रकार आत्मा ही साधक, आत्मा ही साध्य और आत्मा ही साधन है। चेतना के ज्ञान, भाव और संकल्प के पक्ष सम्यक् दिशा में नियोजित होकर साधना मार्ग बन जाते हैं। यह भी कहा जा सकता है कि चेतना के ज्ञानात्मक, भावात्मक और संकल्पात्मक पक्ष ही क्रमशः सम्यक् ज्ञान, सम्यक दर्शन और सम्यक् चरित्र बन जाते हैं। जैन दर्शन के इसी तत्व को वाचक उमास्वाति ने अपने तत्वार्थ सूत्र के प्रथम श्लोक में प्रतिपादित किया है **"सम्यक दर्शन ज्ञान चरित्राणि मोक्षमार्ग"** । प्रत्येक संसारी आत्मा का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति है जो इन

त्रिरत्नों के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है। श्रीमद् राजचन्द्र ने भी इन तीनों को आत्मा से अभिन्न माना है । उनके अनुसार– "ज्ञान आत्मा है, दर्शन आत्मा है और चारित्र भी आत्मा है।"

ज्ञान आत्मद्रव्य की प्रमुख विशेषता है । यह किसी भी जड़ पदार्थ में नहीं मिलती है। आत्मा ज्ञान के द्वारा पदार्थ को जानता है और देखता है, उस पर श्रद्धा करता है तथा हेय-उपादेय का विवेक करके चारित्र मार्ग में आगे बढ़ने के लिये शक्तिमान होता है अर्थात् ज्ञान आध्यात्मिक विकास का आधार है, सिद्धि का साधक है।

संथारापोरिसी की एक गाथा में लिखा है–

'एगो में सासओ अप्पा, नाणदेसण संजुओ
संसा में बहिरा भावा, सव्वे संजोग लक्खणा।।'

'एक मेरा ही आत्मा शाश्वत है जो ज्ञान दर्शन से युक्त है। ज्ञान दर्शन के अलावा सब भाव बहिर्भाव है क्योंकि वे जन्म के संयोग से प्राप्त हुए हैं', अर्थात् वे इस जन्म तक के लिये ही बने हैं । दूसरे जन्म में साथ नहीं जाने वाले। आत्मा अकेला आया है अकेला जायेगा। आत्मा की ज्ञानशक्ति बहुत बड़ी है। आत्मा अपनी ज्ञान शक्ति से करोड़ों वर्षों के संचित कर्मों का क्षण मात्र में भस्म कर सकता है। अज्ञानी जिन कर्मो का क्षय सैकड़ो वर्षों में करता है ज्ञानी पल मात्र में कर डालता है। इलापुत्र के दृष्टान्त से यह स्पष्ट हो जाता है।

'धन दत्त सेठ को अनेक मन्नतें मानने के बाद एक पुत्र की प्राप्ति हुई, जिसका नाम इलापुत्र रखा गया । यह लड़का बड़े ही लाड़ प्यार में पल कर बड़ा हुआ और यौवनावस्था को प्राप्त हुआ। एक बार नट लोग तमाशा दिखलाने आये। एक युवती नटी को देखकर इलापुत्र मोहित हो गया और उसने कहा कि मैं शादी करूंगा तो उसी के साथ। सेठ ने बहुत समझाया पर इलापुत्र नहीं माना। तब सेठ ने नटों को

बुलाकर कहा कि तुम जितना चाहे धन ले लो पर अपनी पुत्री का विवाह मेरे पुत्र के साथ कर दो। नटों ने कहा हम अपनी पुत्री की बिक्री नहीं करते, लेकिन अगर आपका पुत्र हमारे साथ रहे और हमारी सारी कलाएँ सीख कर किसी राजा को खुश कर करके बड़ा इनाम पाये तो हम अपनी पुत्री की शादी उसके साथ कर देंगे। सेठ के इन्कार करने पर भी इलापुत्र ने यह शर्त मंजूर की और घरबार का त्याग कर उनके साथ चल पड़ा। थोड़े ही दिनों में सारी विद्याएँ सीख गया और राजा को रिझाने के लिये बेनातट नगर में आया और अपना अद्‌भुत खेल दिखाने लगा। राजा ने भी खेल देखा। खेल देखते-देखते राजा भी नटपुत्री पर मोहित हो गया। इलापुत्र ने बड़ा अद्‌भुत खेल दिखाया पर राजा खुश नहीं हुआ। इतने वर्ष की मेहनत बेकार जायेगी यदि राजा प्रसन्न नहीं हुआ यह सोचकर वह पुनः पुनः खेल दिखाने लगा। वह पाँचवी बार खेल दिखाते हुए बाँस पर जब चढ़ा उसी समय उसकी नजर पास की एक हवेली पर पड़ी जहाँ एक अति रूपवती स्त्री हाथ में मोदक का थाल लिये खड़ी थी और एक मुनिराज से उसे ग्रहण करने के लिये विनती कर रही थी परन्तु मुनिराज मोदक नहीं ले रहे थे और आँख उठाकर स्त्री की ओर देख भी नहीं रहे थे। यह देख इलापुत्र को भोग की निस्सारता स्पष्ट हो गयी और सोचने लगे धिक्कार है मुझको मेरी इस मोंह में फँसी आत्मा को। और ज्यों-ज्यों आत्मा के प्रति कर्त्तव्य का ज्ञान होता गया त्यों-त्यों उनके कर्मों का क्षय होने लगा और उपार्जित किये कर्मों का नाश होते ही बाँस पर खड़े-खड़े केवल -ज्ञान हो गया उसी समय अलौकिक प्रभाव के चलते बांस की जगह सिंहासन बन गया। यह दृश्य देखकर रानी भी विचार करने लगी कि इतनी रूपवती रानी के होते हुए भी राजा का मन एक नटपुत्री पर आ गया। यह संसार

असार है । उसके हृदय में भी ज्ञान की ज्योति प्रकट हुई और उसके भी घाती कर्मों का नाश होते ही उसे भी केवलज्ञान हो गया। यह दृश्य देखकर राजा का भी हृदय परिवर्तित हुआ तथा पश्चाताप करने लगा। उसे भी संसार असार प्रतीत होने लगा तथा कुछ ही क्षणों में केवलज्ञानी बन गया । इधर नटपुत्री भी विचारने लगी कि इस सारे अनर्थ की जड़ मैं हूँ। मेरे कारण इलापुत्र ने घर छोड़ा, राजा की नियत बिगड़ी। धिक्कार है मेरे इस रूप को। उसके हृदय में भी जबरदस्त परिवर्तन हुआ और शुद्ध भावना ध्याते हुए केवलज्ञान प्राप्त हुआ। अतः आत्मतत्व को पहचानने का नाम ही सम्यग्ज्ञान है । आत्मबोध के बिना संसार की सारी विद्वत्ता निरर्थक है। आचारांग में लिखा है –

'जे एगं जाणइ से सव्वं जाणइ, जे सव्वं जाणइ से एगं जाणइ'

जो अनन्त पर्यायों सहित एक पदार्थ को जानता है वह समस्त पदार्थों को जानता है और समस्त पदार्थों को जानता है वही अनन्त पर्यायों सहित एक पदार्थ को सम्पूर्ण रूप से जानता है।

जे आया से विएणाया जे विएणाया से आया,
'जेण वियाणइ से आया तं पडुच्च पडिसंखाए, एस आयावाई समियाए परियाए वियाहिए त्ति बेमि'

(आचारांग ५। ५ । १६५)

नित्य और उपयोग रूप से जो आत्मा है वही विज्ञाता है अर्थात् वस्तुओं को जानने वाला भी वही विज्ञाता है और वही आत्मा है। और जो जीव का लक्षण उपयोग है जो ज्ञान रूप है अतः इस ज्ञान परिणाम के कारण आत्मा ज्ञानवान् कहा जाता है। जो ज्ञान और आत्मा को अभिन्न मानता है वही आत्मवादी है।

ज्ञान और दर्शन आत्मा का स्वभाव है इसलिये आत्मा कभी भी ज्ञान दर्शन रहित नहीं होती है। निगोद अवस्था में ज्ञान न्यूनतम होता है, केवलज्ञानी हो जाने पर अधिकतम। केवलज्ञानी का अर्थ है पूर्ण ज्ञानी सर्वज्ञ। जो त्रिलोक के समस्त पदार्थों को जान जाते है। देवों को सुख वैभव बहुत होता है उन्हें अवधिज्ञान जन्म से होता है। लेकिन चारित्र के अभाव में केवल ज्ञान प्राप्त नहीं होता। नारकी जीव भी अवधिज्ञानी होते हैं लेकिन दुःख का निरन्तर अनुभव करते रहने के कारण चारित्र परिणामी नहीं होते अतः उन्हें भी केवलज्ञान नहीं होता। तिर्यंचों को जातिस्मरण ज्ञान व अवधिज्ञान भी होता है परन्तु चारित्र के अभाव में वे भी केवलज्ञान प्राप्त नही कर सकते। केवलज्ञान किसी का दिया नहीं आता, उसे स्वयं अपने पुरुषार्थ द्वारा प्राप्त करना पड़ता है। कोई व्यक्ति दीर्घकाल तक कैदखाने में पड़ा हो और अनेक यातनाएं भोगता हो, लेकिन अगर उसे एकाएक छोड़ दिया जाए तो वह कितना आनन्दित होता है । उसी प्रकार आत्मा जो अनन्त भवों से कर्म बन्धन में पड़ा असख्य यातनाएं भोगता आ रहा हो वह कर्म बन्ध से छूट जाने पर कितना आनन्दित होगा। देवताओं के समस्त सुखों को एकत्र कर यदि उन्हें अनन्त गुणा कर दिया जाये तब भी मुक्ति सुख की बराबरी नहीं हो सकती। मुक्तावस्था में, सिद्धावस्था में, आत्मा के ज्ञान, दर्शन, शक्ति और सुख का चरम विकास होता है। उससे श्रेष्टतम अवस्था और कोई नहीं है। यह तीर्थंकरों के जीवन से परिलक्षित होता है जहाँ आत्मा की शक्ति अपनी पराकाष्ठा पर पहुँची होती है।

तीर्थंकर भगवान् के भवों की गणना भी तभी से प्रारम्भ की जाती है जबसे उनकी आत्मा सम्यकत्व को स्पर्श करती है। सम्यकत्व की प्राप्ति, सम्यकत्व का लाभ ये सभी आत्मविकास के मार्ग की ओर

ले जाते हैं । सम्यकत्व या सम्यग्दर्शन बिना सम्यक्ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती, सम्यक्ज्ञान बिना सम्यक्चारित्र की प्राप्ति नहीं होती और सम्यक् चरित्र बिना आत्मा को मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। चतुर्दश पूर्वधर **श्री भद्रबाहु स्वामी** ने उवसग्गहरं स्तोत्र में कहा है —

तुह सम्मते लद्धे, चिंतामणिकप्पपाय वब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं।।

हे पार्श्वनाथ प्रभो ! आपका सम्यक्त्व चिन्तामणि रत्न कल्पवृक्ष से भी बढ़कर है कारण कि उसका लाभ होने पर जीव बिना विघ्न अजरामर स्थान मोक्ष को प्राप्त करते है। आचारांग नियुक्ति में तप, ज्ञान, चारित्र से पूर्व सम्यक् दर्शन की प्राथमिंकता को स्वीकार कर आचार्य भद्रबाहु लिखते हैं– **"तम्हा कम्माणीयं जे उ मणो दंसणम्मि पज्जइच्जादंसणवओ हि सफलाणि हुंति तवणाण चरणाइ"** (आचारांग नियुक्ति गाथा २२१) 'सम्यग्दर्शन से सम्पन्न व्यक्ति के ही तप, ज्ञान और चारित्र सफल होते हैं।'

जैन परम्परा में सम्यक् दर्शन में आत्मसाक्षात्कार, तत्व श्रद्धा, अन्तर्बोध, दृष्टिकोण और श्रद्धाभक्ति आदि का समावेश है। जीव, अजीव आदि नव पदार्थों को जो यथार्थरूप से जानता है उसे ही सम्यक्त्व होता है। आत्मा की मोक्ष की प्राप्ति के लिये सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र का त्रिविध साधना मार्ग बताया गया है। उत्तराध्ययन सूत्र में इन तीनों के साथ सम्यक् तप को भी जोड़ा गया है। पाश्चात्य विचारधारा में भी (१) स्वयं को जानो, (२) स्वयं को स्वीकार करो और (३) स्वयं ही बन जाओ। ये तीनों ज्ञान, दर्शन और चारित्र के समान हैं। आत्मज्ञान में ज्ञान तत्व, आत्मस्वीकृति में

श्रद्धा का तत्व और आत्म निर्माण में चारित्र का तत्व समाहित है। आध्यात्मिक साधना के क्षेत्र में दर्शन और ज्ञान के बाद मुक्ति के लिये चारित्र परम आवश्यक है। सम्यक् चारित्र का निश्चयात्मक अर्थ है स्वस्वरूप में रमण करना।

जैन दर्शन में चारित्र दो प्रकार का माना गया है। (१) व्यवहार चारित्र और (२) निश्चय चारित्र जिन्हें क्रमशः द्रव्य चारित्र और भाव चारित्र भी कहा जाता है। आध्यात्मिक विकास के लिये दोनों की साधना आवश्यक है। जैन दर्शन में भाव चारित्र के रूप में समता का विवेचन है। निश्चय रूप से सम्यक् चारित्र का वास्तविक अर्थ समता की उपलब्धि है। जब आत्मा के द्वारा आत्मा में रमण करता है वही निश्चय आचार होता है **'जे अणण्ण दंसी से अणण्णरामे, जे अणण्ण रामे से अणण्ण दंसी।'** अर्थात् जो आत्मा को देखता है वह आत्मा में रमण करता है जो आत्मा में रमण करता है वह आत्मा को देखता है। तथा व्यवहार चारित्र के अन्तर्गत आचरण के ब्राह्म नियमों का निरूपण है जिनमें समिति, गुप्ति, इन्द्रिय निग्रह, तप-ध्यान तथा महाव्रतों का पालन आदि है। इस प्रकार मुक्ति प्राप्त करने के लिये सम्यक् दर्शन व सम्यक् ज्ञान के साथ ही सम्यक् चारित्र (आचार साधना) में स्वयं को तपाकर ही भव बन्धन से मुक्त हुआ जा सकता है-

'तहा विमुक्करस्स परिन्न चारिणो।
धिइमओ दुक्ख श्वमस्स भिक्खुणो।।
विसुज्जई जंसि मलं पुरे कडं।
समीरियं रुप्प मलं व जोइणा।।'

जिस प्रकार अग्नि चांदी के मैल को जलाकर उसे परिशुद्ध कर

देती है उसी प्रकार ज्ञानपूर्वक आचरण करने वाला धैर्यवान और कष्ट सहिष्णु भिक्षु सर्व संगों से रहित होकर अपनी साधना के द्वारा आत्मा पर लगे हुए पूर्वबद्ध कर्म मल को दूर कर उसे परिशुद्ध बना लेता है।

वास्तव में ज्ञान-दर्शन-चारित्र ये रत्नत्रय मिलकर मोक्ष मार्ग और कर्मबन्धनों से छुटकारा का एक मात्र साधन है।

'नादंसणिस्स नाणं, नाणेण विणा न हुंति चरण गुणा।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो, नत्थि अमोक्खस्स निव्वाणं।।'

(उत्तराध्ययन सूत्र, २८/३०)

अर्थात् सम्यक् दर्शन के बिना सम्यक् ज्ञान पैदा नहीं हो सकता और ज्ञान के बिना मूल और उत्तर गुणों (चारित्र) की प्राप्ति नहीं हो सकती और बिना चारित्र के मोक्ष प्राप्त नहीं होता और बिना मोक्ष के निर्वाण की परम शान्ति प्राप्त नहीं होती।

"अप्पा सो परमप्पा" अर्थात् जिस आत्मा की समस्त शक्तियाँ पूर्ण प्रकट हो जाती है वहीं परमात्मा है। परमात्मा आत्मा के भिन्न नहीं है।

जो सहस्सं सहस्साणं संग्गामे दुज्जए जिणे
एगं जिणेज्य अप्पाणं एस से परमो पओ

(उत्तराध्ययन सूत्र, ९/३४)

एक ऐसा पुरुष जो दुर्जय संग्राम में १० लाख योद्धाओं पर विजय प्राप्त करता है, दूसरा ऐसा पुरुष जो केवल अपनी आत्मा को जीतता है इन दोनों में आत्म विजेता ही परम विजेता है उसका दर्जा ऊँचा है।

विचार, इच्छा, लगन ये सब आत्मा के परिणाम पर निर्भर हैं। आत्मा का परिणाम ही अध्यवसाय है जिसकी जीवन निर्माण में

महत्वपूर्ण भूमिका है। आत्मा शुभ अध्यवसायों से ऊपर उठता है और अशुभ अध्यवसाओं से नीचे गिरता है अध्यवसायों का महत्व प्रसन्नचन्द्र राजर्षि की कथा से पुष्ट होता है :— 'श्रेणिक राजा को जब यह समाचार मिला कि श्रमण भगवान महावीर का नगर के बाहर उद्यान में समवसरण लगा है तो वह प्रभु के दर्शन को जुलूस के साथ गये। जुलूस में दो सिपाही थे। उनमें एक का नाम दुर्मुख और दूसरे का नाम सुमुख था। उन्होंने उद्यान के एक ओर ध्यानावस्थित प्रसन्नचन्द्र राजर्षि को देखा। सुमुख ने कहा– "देखो इन मुनिवर को, कैसी उग्र तपस्या कर रहे हैं इनको बारंबार नमस्कार है।" यह सुनकर दुर्मुख ने कहा-"मैं इन्हें पहचानता हूँ, ये पोदनपुर के राजा प्रसन्नचन्द्र है, जिन्होंने अपने दूध पीते बालक को मंत्रियों के संरक्षण में रख राज्य भार छोड़कर यह रास्ता अपना लिया। इनके पीछे इनके राज्य में मन्त्रियों की नियत बदल गयी और वे बालराज को मारकर राज्य हथियाने का षड्यन्त्र कर रहे हैं । अतः ऐसे में यह पथ अपनाना किस काम का है ? ये बाते करते वे दोनों वहां से आगे बढ़ गये। कुछ ही देर में श्रेणिक राजा वहाँ आये और ध्यानमग्न मुनि महाराज को वन्दन किया फिर वे भगवान् महावीर के पास पहुँचकर वन्दन कर उनकी देशना सुनने लगे। वहाँ अवसर पाकर उन्होंने प्रभु से पूछा "मैंने रास्ते में ध्यानमग्न प्रसन्नचन्द्र राजर्षि की वंदना की। अगर वे उस स्थिति में कालधर्म पाते हैं तो किस गति में जायेंगे।" प्रभु ने कहा– "सातवें नरक में।" यह सुन राजा को आश्चर्य हुआ फिर उन्होंने प्रश्न किया "यदि अभी काल धर्म पाये तो किस गति में जाएंगे।" प्रभु ने कहा– "वे सर्वार्थ सिद्धि–विमान में देव बनेंगे।" यह सुनकर श्रेणिक को और भी आश्चर्य हुआ कि प्रभु ने क्षणभर

पहले कहा सातवीं नरक में जायेगे और अब स्वार्थसिद्धि विमान कहते हैं उनके मन में मंथन चल ही रहा था कि जयनाद होने लगा, दुंदुभि बजने लगी यह सुन श्रेणिक ने प्रभु से पूछा "यह दुंदुभि क्यों बज रही है? और यह जयनाद क्यों हो रहा है? तब प्रभु ने कहा--"हे राजन! प्रसन्नचन्द्र राजर्षि को केवलज्ञान हुआ है।" श्रेणिक ने अपने संशयों के निवारण के लिये प्रभु से कहा "हे प्रभु! ये अचरजभरी बातें मुझे समझ में नहीं आ रही है। कृपया इसका रहस्य समझाएँ।" तब भगवान् ने कहा– "राजन्! जब तुम यहाँ आ रहे थे, तब तुम्हारे जुलूस के आगे चलने वाले दो सिपाही प्रसन्नचन्द्र राजर्षि के विषय में जो बाते करते आ रहे थे उन्हें सुनकर प्रसन्नचन्द्र ऋषि विचलित हो गये और विचारने लगे कि आज तक मैंने जिन पर विश्वास किया वे ऐसे कृतघ्न निकले कि मेरे पुत्र को मार डालने का षड्यन्त्र रचने लगे। नहीं मैं ऐसा नहीं होने दूंगा और क्रोध में वे उनके साथ काल्पनिक युद्ध करने लगे। यहाँ तक कि उनके सब शस्त्र समाप्त हो गये और दुश्मन भी समाप्त हो गये केवल एक बाकी रह गया। तब उन्हें विचार आया कि अपनी लोहे की टोपी से इसका भी नाश कर दूँ ठीक उसी समय हे श्रेणिक तुमने उन्हें प्रणाम किया इसलिये तुम्हारे पहले प्रश्न का उत्तर मैंने दिया कि वो सातवें नरक में जाएँगे। उसके बाद जैसे ही उन्होंने सर पर हाथ रखा, उन्हें लोच किया हुआ मस्तिष्क याद आया और उनका क्रोध उतर गया। वे विचारने लगे मैंने तो सदा के लिये सामायिक व्रत ले रखा है लेकिन यह क्या किया? मेरा ध्यान चूक गया पुत्र के प्रति राग कैसा और मन्त्रियों के प्रति द्वेष क्यों? मेरे इस कृत्य को धिक्कार है मैं उसका प्रायश्चित करता हूँ इन दुष्ट अध्यवसायों से आत्मा को बाहर निकाल देता हूँ।

हे राजन! जब वे ऐसा सोच रहे थे तब तुमने दूसरा प्रश्न किया था तो मैंने कहा था कि वे स्वार्थ सिद्धि विमान में देव बनेंगे। बाद में उनके अध्यवसायों की शुद्धि चालू रही और उत्तरोत्तर आगे बढ़ते हुए क्षपक श्रेणी में आरूढ़ हुए। वहाँ उन्होंने चार घाती कर्मों का नाश किया और उन्हें 'केवल ज्ञान' उत्पन्न हुआ। प्रभु से यह सुनकर श्रेणिक का समाधान हुआ। इस कथा से यह पता चलता है कि आत्मा शुभ अध्यवसायों से चढ़ता है और अशुभ अध्यवसायों से गिरता है। आत्मा का अध्यवसाय हमेशा एक सा नहीं रहता। आत्मा शुभ अध्यवसाय से अशुभ अध्यवसाय में और अशुभ से शुभ में आता है। अध्यवसायों के परिवर्तन में निमित्त कारण बनते है। जैसे आप किसी पर क्रोध कर रहे हो तो हठात् आपके सामने वीतराग भगवान् की मूर्ति आ जाती है तो हमारा अध्यवसाय तुरन्त बदल जाता है। आत्मा के परिणामों या अध्यवसायों की शुद्धि ही भाव धर्म है जो दान-शील-तप से भी उत्तम है। आचारांग सूत्र में कहा गया है-

– **'बंध पमोक्खो सुज्झ अज्झत्थेव'**

अर्थात् बन्ध और मोक्ष तेरे अपने अध्यवसाय पर निर्भर हैं।

अध्यवसायों की तारतम्यता को ही लेश्या कहते हैं। आत्मा पर कर्म बाँधते समय जैसा तीव्र, मंद रस बाँधा हो वैसा ही तीव्र-मंद फल भोगनां पड़ता है। जैन शास्त्रों में इसको समझाने के लिये जम्बू वृक्ष और छः पुरुषों का उदाहरण दिया गया है। छः यात्री एक जम्बू वृक्ष के नीचे आये उनमें से पहले ने कहा यदि इस पेड़ को तोड़ कर गिरा दे तो सभी फल खाये जा सकते हैं। दूसरे ने कहा सारे पेड़ को गिराने की क्या जरूरत है । उसकी एक बड़ी डाली तोड़ने से ही चल जायेगा। तीसरे ने कहा—बड़ी डाली की जरूरत नहीं है एक छोटी

डाली तोड़ने से ही काम चल जायेगा। चौथे ने कहा बड़ी या छोटी डाली तोड़ने की क्या जरूरत है उसमें से फल के गुच्छे ही तोड़ ले। पाँचवें ने कहा गुच्छे तोड़ने की बजाय जामुन ही क्यों न तोड़ ले। छठे ने कहा सिर्फ भूख मिटाना ही प्रयोजन है तो यहाँ ताजी जामुन गिरी पड़ी है उसे ही क्यों न बीनकर अपनी भूख मिटाएँ।

यहाँ पहले पुरुष के अध्यवसाय बड़े अशुभ और तीव्रतम थे । इस स्थिति को कृष्ण लेश्या कहते है। दूसरे पुरुष के अध्यवसाय उससे कम तीव्रतर थे उसे नील लेश्या समझनी चाहिये। तीसरे पुरुष के अध्यवसाय तीव्र थे अतः उसे कपोत लेश्या समझना चाहिये। इन तीनों लेश्याओं की गणना अशुभ लेश्याओं में की जाती है। चौथे पुरुष का अध्यवसाय मंद है जो पीत लेश्या या तेजोलेश्या है। पाँचवें पुरुष का अध्यवसाय पद्म लेश्या और छठे पुरुष का अध्यंवसाय शुक्ल लेश्या समझना चाहिये। तेजो, पद्म और शुक्ल लेश्याओं की गणना शुद्ध लेश्याओं में की जाती हैं।

आत्मा द्वारा ग्रहण किये गये पुद्गल, लेश्या रूप से परिणत होते हैं । इस स्थिति में वह द्रव्य लेश्या के नाम से अभिहित होता है। जिनमें वर्ण, गंध, रस और स्पर्श होता है और आत्मा के अध्यवसाय भाव लेश्या कहलाते है।

आत्मा अनन्त शक्तिमान और वीर्यवान होती है। आत्मा वीर्य शक्ति से युक्त है। इस शक्ति द्वारा आत्मा कोई भी क्रिया या प्रवृत्ति करने में सक्षम होती है। खाना-पीना, सोना, उठना, चलना, विचारना, भोग विलास करना धर्म की आराधना करना आदि सभी क्रियाएं आत्मा की इसी शक्ति में निहित है। आत्मा में यदि यह शक्ति न हो तो वह निस्तेज होने लगती है। विषय वासना में संयम तथा धर्म आराधन

द्वारा आत्मा का वीर्य निरन्तर स्फुर्तिमान बनाये रखना चाहिये। वीर्य के पतन से आत्मा का पतन होता है इसलिये भोग में संयम की बात कही गयी है।

तीर्थंकरों का प्रमुख ध्येय मनुष्य जाति को दुःखों से मुक्त कराना था। उन्होंने इस तथ्य को गहराई से समझकर बताया कि समस्त दुःखों का मूल कारण भोगासक्ति में है। उत्तराध्ययन सूत्र में उल्लेख है कि समस्त भौतिक और मानसिक दुःखों का मूल व्यक्ति की भोगासक्ति में है। चाहे स्वर्ण और रजत के कैलाश के समान असंख्य पर्वत भी प्राप्त हो जाएँ फिर भी वे मनुष्य की तृष्णा पूर्ण करने में असमर्थ हैं। जैन दर्शनानुसार सुख-दुःख अहंकृत है। वास्तविक आनन्द की उपलब्धि भौतिक पदार्थों से नहीं होकर आत्मा से होती है। यह आत्मोपलब्धि ममत्व के त्याग से प्राप्त होती है। ममत्व के त्याग से ही समता का सर्जन होता है।

जिण वयणे अणुरत्ता, जिणवयणं जे करेंति भावेण
अमला असंकिलिट्ठा, ते हुंति परित्तसंसारी ।।२६।।

परम महिमान्वित जिन वचनों में अनुरक्त होकर जो जिन वचनानुसार भाव पूर्वक अनुष्ठान करते हैं। वे मिथ्यात्वादि, मल और क्लेशों से रहित होकर संसार की मृत्यु-उन्मुखी, क्लेशकारी सागर को पार कर जाते हैं ।

"उपयोगो लक्षणम्"– तत्वार्थसूत्र में जीव का लक्षण उपयोग बताया गया है। चेतना युक्त बोधगम्य शक्ति (जीव) जिसको आत्मा कहते हैं वह अनादि सिद्ध व स्वतन्त्र द्रव्य है। तात्विक दृष्टि से अरूपी होने के कारण उसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा नहीं हो सकता पर स्व-संवेदन प्रत्यक्ष या अनुमान आदि से किया जा सकता है। संसार जड़ चेतन पदार्थों का मिश्रण है तथा इन पदार्थों का विवेक पूर्ण

निश्चय उपयोग द्वारा ही हो सकता है। उपयोग दो प्रकार का होता है--ज्ञानोपयोग और दर्शनोपयोग। बाह्य वस्तु की चेतना को ज्ञान व आत्म चेतना को दर्शन कहा जाता है। जीव में बाह्य और आन्तरिक दोनों चेतना विद्यमान रहती हैं। चेतना जीव द्रव्य का सारभूत गुण है जो प्रत्येक अवस्था में जीव में विद्यमान रहता है। जिसमें चेतना नहीं वह जड़ है। जीव और अजीव में समस्त लोक समाहित है। जैन दर्शन में नव तत्त्वों का तथा कही-कही पर (तत्त्वार्थ सूत्र) सात तत्त्वों प्रतिपादन किया गया है। जीव अजीव के अलावा अन्य तत्त्व हैं संवर, आश्रव, निर्जरा, बन्ध, मोक्ष, पुण्य और पाप।

षड्दर्शन समुच्चय (श्लोक ४७) में आचार्य हरिभद्र सूरि ने लिखा है-

"जीवाजीवौ तथा पुण्यं पापाश्रव संवरो बंधो विनिर्जरा मोक्षो नवतत्वानि तन्मते ।।"

उत्तराध्ययन में इन्हें तथ्य कहा गया है (अ. २८ गाथा १४)

ठाणंगसूत्र (६६५ सूत्र) में इनकी संज्ञा सद्भाव दी गयी है।

अजीव– जीव के लक्षण जिसमें न हो, कोई कर्म न हो, कर्त्ता न हो जड़ स्वरूप हो उसका नाम अजीव है। ये अजीव तत्व पांच प्रकार के है–धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आकाशस्तिकाय पुद्गलास्तिकाय और काल। अस्ति का अर्थ है प्रदेश और काय का अर्थ है समूह।

परमाणु जब अवयवी वस्तु पदार्थ के साथ सम्बद्ध हो तब वह प्रदेश कहा जायेगा। प्रदेश का अर्थ पदार्थ का सूक्ष्म से सूक्ष्म अंश। जो पदार्थ इस लोकाकाश में जड़ और चेतन पदार्थों की गति में सहायक हो उसे धर्मास्तिकाय कहा गया है। वर्तमान में वैज्ञानिक इथर नाम के पदार्थ को 'धर्मास्तिकाय' के रूप में मानते हैं।

जड़ चेतन पदार्थों के स्थितिशील होने में सहायक पदार्थ अधर्मास्तिकाय है। आकाश अर्थात् जो अवकाश दे, स्थान दे। इसके दो भाग हैं– जहाँ तक धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय नामक दो पदार्थ हैं। वहां तक लोकाकाश है और जहाँ इन दोनों का अस्तित्व नहीं है उसको अलोकाकाश कहते हैं। अलोकाकाश में न कोई जीव है न कोई परमाणु पुद्गल।

गइलक्खणो धम्मो अहमम्मो ठाणलक्खणो
भायणं सव्वदव्वाणं, नहं ओगाहलक्खणं।।

(उत्तराध्ययन सूत्र २८/९)

अर्थात् 'धर्मद्रव्य का लक्षण गति है, अधर्मद्रव्य का लक्षण स्थिति है । इसी प्रकार सब पदार्थों को अवकाश देना आकाश का लक्षण है।'

यह सारा जगत परमाणु—पुद्गलों का कार्य है यह द्रव्य रूप से अनादि और अनन्त है। यह जो चर्म चक्षु से दृश्यमान है, सड़न-गलन जिसका स्वभाव होता है, जो परिवर्तनशील हो, रूप-रस, गन्ध, स्पर्श जिसमें हो उसे पुद्गलास्तिकाय कहते है।

काल अजीव अरूपीद्रव्य है। निश्चय से काल अखण्ड है।

इन पाँचों में सारे संसार के अजीव तत्त्वों का समावेष है।

फल की अपेक्षा से कर्म दो प्रकार के होते है। (१) शुभ फल देने वाले और (२) अशुभ फल देने वाले कर्म। शुभ फल देने वाले कर्म **पुण्य** कहलाते हैं और अशुभ फल देने वाले कर्म **पाप** कहलाते हैं।

आश्रव— कर्म का आत्मा की ओर आना या जिससे कर्म बन्ध हो उसे आश्रव कहते हैं।

संवर— आत्मा की ओर आते हुए कर्मों को रोकना संवर कहलाता है।

निर्जरा— कर्मों को गिरा देना, नाश कर देना निर्जरा है। आश्रव का काम है कर्मों को लाने का और निर्जरा का काम है लगे हुए कर्मो को दूर करना।

बंध— कर्मणा वर्गों एवं उनके पुद्‌गलों का आत्मा के साथ सम्बन्ध होना बंध कहलाता है।

मोक्ष— कर्म के सर्व बन्धनों से आत्मा की मुक्ति मोक्ष है।

आत्मा अनादि काल से कर्म बन्धन में है। कर्मबन्धन के चार कारण होते हैं। मिथ्यात्व, अविरति, कषाय और योग। कर्म आठ प्रकार के होते हैं। ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र और अन्तराय।

ज्ञानावरणीय कर्म— जो कर्म ज्ञान पर आवरण डाले अर्थात् ज्ञान के प्रकाश को कम करें ज्ञानावरणी कर्म कहलाते हैं। ज्ञान पाँच प्रकार का होता है। मतिज्ञान, श्रुतिज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्याय ज्ञान व केवलज्ञान।

दर्शनावरणीय कर्म— जो कर्म आत्मा के दर्शन गुण पर आवरण डाले वह दर्शनावरणीय कर्म कहलाता है। दर्शनावरणीय कर्म की *उत्तरप्रकृतियाँ ९ हैं। (१) चक्षुदर्शनावरणीय (२) अचक्षुदर्शनावरणीय* (३) अवधि दर्शनावरणीय (४) केवल दर्शनावरणीय (५) निद्रा (६) निद्रा-निद्रा (७) प्रचला (८) प्रचला-प्रचला (९) स्त्यानर्द्धि।

वेदनीय कर्म— जो कर्म आत्मा को सुख दुःख का वेदन कराये , अनुभव कराये वह वेदनीय कर्म कहलाता है। इस कर्म की दो प्रकृतियाँ है।

(१) शातावेदनीय (२) अशातावेदनीय

मोहनीय कर्म— जिस कर्म के कारण जीव मोहग्रस्त होकर संसार में फँसता है उसे मोहनीय कर्म कहते हैं। इसके दो विभाग हैं। (१) दर्शन मोहनीय और चारित्र मोहनीय।

आयुष्य कर्म— जिस कर्म के कारण आत्मा को एक शरीर में एक निश्चित समय (आयु) तक रहना पड़े उसे आयुष्य कर्म कहते हैं। इसकी उत्तर प्रकृतियाँ चार हैं। (१) देवता का आयुष्य (२) मनुष्य का आयुष्य (३) तिर्यंच का आयुष्य और (४) नरक का आयुष्य।

नामकर्म— जिस कर्म के कारण आत्मा शुभ-अशुभ शरीरादि धारण करता है उसे नाम कर्म कहते है। नामकर्म की मूल उत्तर प्रकृतियाँ ४२ हैं।

गोत्रकर्म— जिसके द्वारा जीव को उच्चता-नीचता प्राप्त होती है वह गोत्र कर्म कहलाता है। इसके दो प्रकार है। (१) उच्चगोत्र (२) नीच गोत्र

अन्तरायकर्म— जिस कर्म के कारण आत्मा की शक्ति में अन्तराय या विघ्न आयें वह अन्तराय कर्म कहलाता है । इसकी उत्तर प्रकृतियाँ पाँच है—

दानांतराय, लाभांतराय, भोगान्तराय, उपभोगांतराय, वीर्यांतराय

जैन दर्शन में जीव को ही आत्मा माना गया है। तत्त्वार्थ सूत्र के द्वितीय अध्याय के १०वें श्लोक में आत्मा के दो भेद बताये गये हैं संसारी और मुक्त। जो आत्मा सम्पूर्ण कर्म क्षय कर मोक्ष प्राप्त करती है वही मुक्त आत्माएँ कहलाती हैं। और जो जीव संसार में भ्रमण कर रहे है वो संसारी कहलाते हैं। सांसारिक जीव मनवाले और मन रहित दो प्रकार के हैं। इनके भी दो भेद हैं- त्रस और स्थावर। एकेन्द्रिय जीव-पृथ्वीकाय, जलकाय, वनस्पतिकाय आदि जीव स्थावर माने जाते है। अन्य द्विइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउन्द्रिय तथा पंचेन्द्रिय जीव त्रस जीवों की

श्रेणी में आते हैं। सांसारिक आत्मा चार प्रकार की योनियों में जन्म लेती हैं। देव, मनुष्य, तिर्यंच और नारकीय। आत्मा अपने शुभ और अशुभ कर्मों के अनुसार इन योनियों में जन्म लेता है। शुभ कर्म करता है तो देव और मनुष्य योनियों में और अशुभ कर्म करता है तो तिर्यंच या नारकीय योनि में जन्म लेता है। जैन दर्शन में जीवों के चेतना की मात्रानुसार वर्गीकरण किया गया है। एकेन्द्रिय द्विइन्द्रिय तेइन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय। एकेन्द्रिय जीव-पृथ्वीकाय, जलकाय, वायुकाय, अग्निकाय और वनस्पतिकाय ये पाँचों स्थावर कहलाते हैं। इनमें केवल एक स्पर्शन इन्द्रिय होती है। जिनके त्वचा और जीभ दो इन्द्रिय होती है वे द्वीन्द्रिय जीव कहलाते है। कीड़े, लट, आदि जीव इसी श्रेणी में आते हैं।

जूँ, चींटी आदि जीवों में स्पर्श, रसना और सूँघने की शक्ति होने से ये तेइन्द्रिय जीव कहलाते हैं। जिनके त्वचा, जीभ, नासिका और नेत्र होते हैं वे चतुरिन्द्रिय जीव कहलाते हैं । मक्खी, भंवरे, बिच्छू आदि चतुरिन्द्रिय जीव हैं। जिनके त्वचा, जीभ, नासिक, नेत्र और कान होते हैं वे पंचेन्द्रिय जीव कहलाते हैं। पंचेन्द्रिय जीवों के चार भेद हैं। मनुष्य, तिर्यंच, देव, नारकी। इस प्रकार कृमि, जूँ, भंवरे और मनुष्य में क्रमशः एक-एक इन्द्रियों की चेतना की वृद्धि होती है। तीर्थंकरों में इन्द्रिय चेतना के अलावा मति, श्रुति, अवधि, मनपर्याय और केवलज्ञान रहता है। अतः वे सर्वज्ञ कहलाते हैं। इस प्रकार चेतना की मात्रा के अनुसार जीव ऋृंखला बद्ध है।

आधुनिक जीव वैज्ञानिक समानताओं के सिद्धान्त को हजारों वर्षों पहले उमास्वाति ने तत्त्वार्थ सूत्र के श्लोक **'परस्परोपग्रहो**

जीवानाम' में स्पष्ट किया था। प्रत्येक सांसारिक जीव द्रव्य का कार्य एक दूसरे की सहायता करना है। कोई भी जीव अकेला नहीं रह सकता। प्रत्येक जीव एक दूसरे पर आश्रित है व जैविक विकासक्रम में एक दूसरे का सहयोग आवश्यक है।

आत्मा स्वदेह परिणाम वाली है और उसके अंसख्यात प्रदेश हैं। एक परमाणु जितने आकाश को घेरता है उसे एक प्रदेश कहते है। इन्हीं असंख्यात प्रदेशों से युक्त आत्मा अखण्ड द्रव्य है। आत्मा अणु भी है विभु भी। सूक्ष्म इतनी है कि एक आकाश प्रदेश के अनन्तवें भाग में समा सकती है। और विभु इतनी कि समग्रलोक में व्याप्त है। संकोच और विस्तार के गुण के कारण एक हाथी में रहने वाली आत्मा जब चींटी के शरीर में प्रवेश करती है तब संकुचित हो जाती है। जैसे दीपक का प्रकाश छोटे कमरे में भी व्याप्त रहता है और बड़े कमरे में भी। ठीक इसी प्रकार आत्मा शरीर के परिणाम के साथ घटती है। ज्यों-ज्यों शरीर की वृद्धि होती है आत्मा का परिणाम भी बढ़ता है।

'दणवतो खित्ततो चेव काल तो भाव तो तहा
णिच्चाणिच्चंतु विण्णेयं संसारे सव्व देहिणं'

संसार की समस्त देहधारी आत्माओं को द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव से नित्य और अनित्य जानना चाहिये।

विश्व के समस्त पदार्थ सार्थ द्रव्य रूप में नित्य है और पर्याय परिवर्तन की अपेक्षा नित्य भी है। उमास्वाति ने कहा है– **'उत्पादव्यय ध्रौव्ययुक्तं हि सत्त्'** (तत्वार्थ अ. ५ सू २८)

हर पदार्थ, प्रतिक्षण उत्पत्ति और विलय में परिवर्तित हो रहा है। जैन दर्शन में तत्त्व वस्तु या पदार्थ में प्रतिक्षण उत्पाद, व्यय और

ध्रौव्य की धारा चलती रहती है। स्वजाति का परित्याग किये बिना भावान्तर का ग्रहण करना उत्पाद है। उदाहरण के लिये मिट्टी का पिण्ड घर पर्याय में परिणत होता हुआ भी मिट्टी ही रहता है। मिट्टी रूप जाति का परित्याग किये बिना घर रूप पर्यायान्तर उत्पाद कहलाता है। इसी प्रकार स्वजाति का परित्याग किये बिना पूर्व भाव का जो विनाश है उसको व्यय कहते हैं। घट के निर्माण में मिट्टी के पिण्ड का विनाश होता है अर्थात् पिण्ड की आकृति केवल बदल जाती है मूल उपादानगत तल के रूप में मिट्टी तो वही रहती है। अनादि पारिणामिक स्वभाव के कारण वस्तु का ध्रौव्य है। अर्थात् चेतन-अचेतन द्रव्य अपनी जाति को नहीं छोड़ते फिर भी उनमें जो परिवर्तन होता है या जो नवीन रूप की प्राप्ति होती है उसे उत्पाद तथा पूर्व अवस्था के त्याग को व्यय तथा उसके असली अनादि स्वभाव रूप अन्वय को ध्रौव्य कहते हैं। जैसे दूध दही में परिणत होता है, दही का मट्ठा बनता है फिर भी दूध रूप में उसकी ध्रौव्यता बनी रहती है अतः प्रत्येक पदार्थ या तत्व उत्पाद, व्यय और ध्रौव्यात्मक है। आचार्य सिद्धसेन दिवाकर ने कहा-

'उप्पज्जंति वियंति भाव णियमेण पज्जवणयस्स।
दव्व दिट्ठयस्स सव्वं सया अणुप्पन्नमविणट्ठ।।'

(सन्मति तर्क अ. १ गा. १०)

पर्याय नय की अपेक्षा से प्रत्येक पदार्थ उत्पन्न भी होता है और नष्ट भी परन्तु द्रव्यार्थिक दृष्टि से पदार्थ अनुत्पन्न और अविनाशी है। पर्याय नय की दृष्टि से विश्व की कोई भी वस्तु शाश्वत नहीं है वह प्रतिक्षण बदलती रहती है। एक सूक्ष्म अणु भी अपने पर्यायों में प्रतिक्षण परिवर्तित हो रहा है और विराट सुमेरु भी।

आत्मा दुःख से बचना चाहता है पर दुःख के कारणों से नहीं बच पाता।

'जस्स भीता पलायंति जीवा कम्माणुगामिणो।

तमेवादाय गच्छंति किच्चा दिन्ना व वाहिणी।।३।।'

कर्मानुगामी आत्मा जिससे भीत होकर पलायन करता है किन्तु अज्ञानवश पुनः उसी दुख को ग्रहण करता है जैसे युद्ध से भागती सेना पुनः शत्रु के घेरे में फंस जाती है।

आत्मा स्वकृत कर्मों से बद्ध होकर गमन करता है और अपने ही कर्मों द्वारा पुनः इस संसार में आता है। शुभ और अशुभ कर्म ही जन्म और मृत्यु के बीज है।

भगवती सूत्र में गांगेय अणगार प्रभु से प्रश्न करते है 'प्रभु, नारक जीव नरक में स्वयं उत्पन्न होते हैं या वहाँ उन्हें दूसरा उत्पन्न करता है?' प्रभु ने उत्तर देते हुए कहा 'गांगेय नारक स्वयं ही नरक में उत्पन्न होते हैं दूसरा उन्हें वहाँ कोई उत्पन्न नहीं कर सकता।'

गांगेय ने पुनः प्रश्न किया– 'प्रभो आप किस अपेक्षा से ऐसा फरमा रहे है?' प्रभु ने उत्तर दिया– 'कर्म के उदय से, कर्म के भारी होने के कारण, अशुभ कर्म के विपाकोदय और फलोदय से आत्मा नरक में उत्पन्न होता है अतः नरक स्वयं नरक में उत्पन्न होता है ऐसा कहा जाता है।' आत्मा के परिभ्रमण का मूल कारण कर्म है।

'कर्म पहले है कि आत्मा' इसका उत्तर इस गाथा में मिलता है।

बीया अंकुर णिप्फत्ती अंकुरातो पुणेवीयं।

बीये संबुज्झज्जमाणम्मि अंकुरस्सेव संपदा।।४।।

बीय भूताणि कम्माणि संसारम्भि अणादिए।
मोहमोहित चित्तस्स ततो कम्माण संतति

अर्थात् बीज से अंकुर फूटता है और अंकुरों में से बीज निकलते है। बीजों के संयोग से अंकुरों की सम्पत्ति बढ़ती है। अनादि संसार में कर्म बीजरूप है। कषायों के द्वारा कर्म संतति बढ़ती जाती है। बीज में एक विराट वृक्ष समाया रहता है जो अनुकूल वातावरण में एक विशाल वृक्ष बन जाता है जो अपने में हजारों बीज समाये हुऐ हैं। इसी प्रकार अज्ञानी आत्मा उदयगत कर्मों को क्षय करने के साथ-साथ राग द्वेष द्वारा अनन्त-अनन्त कर्मों को भी उसी क्षण बाँध लेता है। इस प्रकार आत्मा और कर्म अलग-अलग स्वभावी होने पर भी अनन्त काल के सहयात्री है। अतः आत्मा दुःख को नष्ट करने के लिये दुःख के मूल को समूल नष्ट कर दे अर्थात् आत्मा कर्मों को प्रतिक्षण नष्ट कर रहा है पर उसकी जड़ रागद्वेष को ही समाप्त कर आत्मा कर्म बन्धन से मुक्त हो सकता है। जन्म और मृत्यु में जिसे वास्तव में बन्धन की अनुभूति होती है वही बंधन को तोड़ सकता है। आत्मा मृत्यु से आगत है, जन्म से प्यार करता है परन्तु स्थितिप्रज्ञ आत्मा को न जन्म के प्रति मोह होता है न मौत से डर। वह आत्मविकास की दिशा में इन्हें बन्धन मानता है। 'शील जिसका रथ हो ज्ञान दर्शन जिसके सारथी हों ऐसे रथ पर आरूढ़ होकर आत्मा अपने द्वारा अपने आपको जीतता है और शुभ स्थिति को प्राप्त करता है।'

'सीलक्खरहमारुढ़ो णाण-दसण सारही।
अप्पणा चेवभप्पाणं, जदित्ता सुभमहेती।।
एवं से बुद्धे मुत्ते ०।'

जब नये कर्मों का आना रुक जाता है और पुराने कर्म क्षय हो जाते है तब आत्मा को नया शरीर धारण नहीं करना पड़ता। उस समय वह उर्ध्वगति से लोक के अग्रभाग सिद्धशिला में विराजकर मोक्ष के अक्षय अनन्त सुख का उपभोक्ता बन जाता है।

शरीर रहित आत्मा आकाश के किस भाग में रहता है । तत्वार्थ सूत्र के अन्तिम अध्याय में आचार्य उमास्वाति ने कहा है **'तदन्तर मूर्ध्व गच्छत्या लोकान्तात्'** अर्थात् सम्पूर्ण कर्मों के क्षय होने के बाद आत्मा सीधी उर्ध्वगति करता है और लोक के अग्र भाग में आकर ठहर जाता है। जैसे कि तुम्बी अगर वजनदार वस्तुओं से भारी नहीं कर दी गयी हो तो सीधी पानी की उपरी सतह पर आ जाती है ठीक उसी प्रकार कर्म बन्धन के दूर होते ही जीव भी उर्ध्वगामी बन लोक के अग्रभाग में स्थिर हो जाता है। यही आत्मा की उच्चतम अवस्था है।

मृत्यु मात्र शरीर परिवर्तन की एक क्रिया है। जन्म कुछ समय के लिये ठहराव का एक ज़ीवन देता है। जीवन की अन्तिम उपलब्धि आत्मा की कमी मृत्यु नहीं होती।

जया कम्मं खविताणं सिद्धि गच्छई नीरओ
तथा लोगमत्थयन्थो सिद्धो हवई सासओ

दशवैकालिक सूत्र अ. ४ गाथा १९ अर्थात् कर्मों से मुक्त होने पर आत्मा ऐसी अवस्था में पहुँचती है जहाँ जन्म नहीं, मरण नहीं, भय नहीं, रोग नहीं, शोक नहीं, दु:ख नहीं, मोह माया नहीं।

आत्मा के विषय में जैन दर्शन में बहुत ही विशद सूक्ष्म स्पष्ट विवेचन मिलता है । ज्ञान, दर्शन, सुख, बल आदि अनन्त गुणों से पूर्ण, अखण्ड, अमर स्वरूप आत्मा, अनादि, अनन्त तथा स्वतन्त्र

अस्तित्व वाला है। बहिरात्मा रूप में सांसारिक विषयों में लिप्त, आत्मश्रद्धा से शून्य, अन्तरात्मा रूप में आत्म-श्रद्धा से युक्त तथा परमात्मा रूप में संसार जाल से पूर्ण मुक्त, पूर्ण ज्ञाता, अजर-अमर तथा निर्विकार रूप में आत्मा परम लक्ष्य को प्राप्त करता है।

माणुसत्तम्मि आयाओ जो धम्मं सोच्च सद्दहे।
तवस्सी वीरियं लद्धं, संवुडे णिद्धुणे रयं ।।
सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मोसुद्धस्स चिट्ठइ।
णिव्वाणं परमं जाइ, घयसित्तिव्व पावए ।।

जो आत्मा मनुष्य जन्म पाकर धर्म को सुनता है, श्रद्धा करता और संयम में उद्यमी होता है वह संवृत्त तपस्वी कर्मों का नाश करता है। ऐसे सरल भाव वाले आत्मा की ही शुद्धि होती है। शुद्ध आत्मा में ही धर्म ठहरता है। घृत से सींची हुई अग्नि की तरह देदीप्यमान होता हुआ वह निर्वाण प्राप्त करता है।

आगरा मंडल में यत्रतत्र बिखरे पुरातत्वावशेष

विश्व में पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण आगरा नगर जिसे कुछ वर्ष पूर्व तक मुगलकालीन इतिहास के कारण ही जाना जाता रहा है, अब एक अलग तस्वीर लेकर उभर आया है । इसकी आयु मात्र ५००-६०० वर्ष की आंकी जाती थी। लेकिन इस ऐतिहासिक नगर के ५० किमी. क्षेत्र के दायरे में लगातार प्राप्त हो रहे गुप्तोत्तर कालीन जैन पुरातत्व सामग्री निकलने के कारण इसकी आयु कम से कम २००० वर्ष की ठहरती है।

जैन भौगोलिक दृष्टि से आगरा— जैन मतानुसार भारत के विभिन्न जनपदों को आर्य प्रदेश और अनार्य देशों में विभक्त किया गया था। आर्य देश वह होते हैं जहाँ तीर्थंकर केवली, चक्रवर्ती, वासुदेव, प्रतिवासुदेव आदि जन्म लेते हैं, विचरते हैं, निर्वाण प्राप्त करते हैं। यही स्थल तीर्थ कहलाते हैं। श्वेताम्बर मान्यतानुसार आर्य देशों के अर्न्तगत २५ १/२ जनपद निर्धारित किये गये हैं। अधिक विस्तार में न जाते हुए–यहां यह जान लेना आवश्यक है कि आगरा नगर के एक ओर सूरसेन जनपद है जिसकी राजधानी मथुरा यहां से मात्र ५० कि.मी. है और दूसरी कुशांत जनपद जिसकी राजधानी शौरीपुर जो २२वें तीर्थंकर नेमीनाथ की जन्मस्थली भी है, मात्र ७० कि.मी. दूर है और इन दोनों जनपदों को जोड़ने वाला बीच का नगर आगरा ही है। यहां उल्लेखनीय है कि आगरा नगर भी सूरसेन जनपद एवं ब्रजमण्डल क्षेत्र

की चौरासी कोस की परिधि के अन्तर्गत आता है। अतः इन जनपदों में जैन साध्वाचार की दृष्टि से अनुकूल वातावरण होने से यहां जैन साधुओं मुनियों का विचरण-परिव्राजन स्वाभाविक रूप से होता रहा।

मथुरा में आगम वाचना— नन्दी सूत्र की चूर्णि में लिखा है कि बार-बार दुष्काल पड़ने के कारण आगम शास्त्र के जानकार श्रमण काल कवलित होने लगे जिससे कंठस्थ आगम ज्ञान भी विच्छेदित होने लग । चिन्तित जैन संघ द्वारा आगम ज्ञान को व्यवस्थित करने के लिये १७०० वर्ष पूर्व आचार्य स्कंदिल के नेतृत्व में मथुरा में आगम वाचना के लिये हजारों की संख्या में श्रमण वर्ग एकत्रित हुआ था जिसे जो याद था एक दूसरे से पूछ-पूछ कर सूत्रों को व्यवस्थित कर लिया गया। आज भी यह वांचना माथुरी वांचना या स्कंदिल वाचना के नाम से प्रसिद्ध है। इस ऐतिहासिक वांचना का मथुरा में होना यह दर्शाता है कि उस काल में मथुरा जैन संस्कृति का प्रधान केन्द्र था, अन्तिम केवली जम्बू स्वामी भी यहीं से मोक्ष गये थे। चौदहवीं सदी के मुहम्मद तुगलक प्रतिबोधक जैनाचार्य जिनप्रभसूरि ने भी अपने ग्रन्थ विविध तीर्थ कल्प में मथुरा तीर्थ की वैभवता का आंखों देखा हाल वर्णित किया है। यहां उल्लेखनीय है कि मथुरा के कंकाली टीले से उत्खनन में २००० वर्ष पूर्व के कुषाणकालीन सैंकड़ों जिन प्रतिमायें, शिलापट्ट, आयागपट्ट आदि प्राप्त हुए थे जिनके अध्ययन से कई नये तथ्य प्रकाश में आये थे। वहां आज भी खुदाई की आवश्यकता है।

इस प्रकार यहां यह कहा जा सकता है आगरा नगर के आस-

पास का क्षेत्र जैन श्रमणों के विचरण का क्षेत्र रहा है। मथुरा में आगम वाचना के पश्चात भी आस पास के क्षेत्र में बड़ी संख्या में जैन श्रमणों ने विचरण किया होगा। इस क्षेत्र के कई राजा महाराजाओं, श्रेष्ठियों को प्रतिबोध देकर साधु आचार्यों द्वारा समय-समय पर विशाल जिन मन्दिरों की स्थापना की जाती रही है। इस कथन की पुष्टि आगरा नगर के आस-पास बिखरे पड़े १००० से २००० वर्ष पुराने जिन मन्दिरों के भग्नावशेषों से होती है। इनमें पुरातत्त्व विभाग द्वारा फतेहपुर सीकरी, कागारौल, लालकिला, सकलपुर, भड़कौल, शौरी पुर आदि क्षेत्रों को चिन्हित भी किया गया है। यहां आगरा श्री संघ द्वारा उत्खनन के प्रयास किये जा रहे हैं। २ वर्ष पूर्व तो फतेहपुर सीकरी के एक टीले में पुरातत्व विभाग द्वारा उत्खनन भी कराया गया था जहां दसवीं, ग्यारहवीं शताब्दी की ३६ कलात्मक खंडित जिन प्रतिमायें प्राप्त हुई थीं । इनमें जैन सरस्वती की प्रतिमा को तो पुरातत्व विभाग विश्व की सबसे सुन्दर प्रतिमा मान रहा है। यहां अन्य टीलों पर भी उत्खनन की अपेक्षा है।

इस प्रकार से कहा जा सकता है कि जैन धर्म का अतीतकालीन सांस्कृतिक वैभव यहां के आस-पास के गांवों के टीलों-खण्डहरों आदि में दबा पड़ा है। जरूरत है सिर्फ शोध और खोज की। लोग सवाल करते हैं कि टूटी-फूटी मूर्तियों खण्डहरों में समय गंवाने से क्या फायदा? ऐसे लोगों को इतिहास और संस्कृति से कोई लगाव नहीं है, तभी वह ऐसा सोचते हैं। यहां हमें सोच विचार बंद करके अपनी अतीतकालीन संस्कृति की रक्षा के लिये आगे आना चाहिये। जैन धर्म की उज्ज्वल इतिहास की गाथा कहने वाले ये पुरातत्वावशेष

काल की क्रूरता के शिकार तो हुए ही हैं और पता नहीं कब किसी अज्ञानी द्वारा इनको चुरा लिया जाय, गिट्टी बनाकर रोड में बिछा दिया जाय या किसी के मकान की नींव का हिस्सा बन जाय और इतिहास ठगा सा अपनी किस्मत पर आंसू बहाता रहे।

आवश्यकता है जैन समाज शोध खोज के लिए एक बड़ा फंड बनाये और उसके लिये शासन तंत्र को सहयोग देकर भूगर्भ में दबी छिपी अपनी संस्कृति और सभ्यता को सामने रखकर जैनत्व के गौरव को बढ़ावे। मेरा करबद्ध निवेदन है पूज्य आचार्यों से और इतिहास प्रेमी दानवीरों से कि वह आगे आकर इस ओर अपना सहयोग देकर इस कार्य को आगे बढ़ावें।

घर-मंदिर से पावन धाम बन रही
श्री कृष्णगिरि शक्तिपीठ एवं शक्तिनगरी

प्रकृति की निराली छटा में चारों तरफ पहाड़ों के बीच बेंगलोर-चेन्नई राजमार्ग पर राजा कृष्णदेवराय के समय से बसा तमिलनाडू राज्य का कृष्णगिरि गाँव नारियल, इमली एवं आम के बृहत् उत्पादन के लिए लंबे समय से प्रसिद्ध है। अधिक मात्रा में फल देने वाले यहाँ के रसीले आमों से आम्ररस बनाकर पैक करके देश-विदेशों में भेजा जाता है। यहाँ पर कृष्णगिरि रिसरवायर प्रोजेक्ट-डेम (Krishnagiri Reservoir Project-Dam) भी है।

महामंत्र नवकार के प्रचण्ड प्रचारक, शक्तिपीठाधिपति श्री वसंत गुरुजी द्वारा स्थापित घर-मंदिर में विराजित श्री पार्श्व-धरणेन्द्र-पद्मावती

शक्तिपीठ हजारों-हजारों भक्तों का श्रद्धा-केन्द्र बनकर बृहत् संख्या में श्रद्धालुओं का लगातार आवागमन होने से इसका विशाल रूप देते हुए गुरुजी की सद्-प्रेरणा एवं अथक प्रयासों से शक्तिनगरी का निर्माण कार्य जोरों से चल रहा है।

चेन्नई मार्ग पर कृष्णगिरि से ५ कि. मी. दूर लहलहाते हुए हरे-भरे खेत-खलियानों के बीच सौंदर्य भरे वातावरण में श्री पार्श्व प्रभु-धरणेन्द्र-पद्मावती शक्तिनगरी बसाई जा रही है।

२१ १/४ X ६ १/२ फुट की टेरेकोटा की पद्मासन मुद्रा में भगवान पार्श्वनाथ की विशाल प्रतिमा, जिसके आस-पास धरणेन्द्र देव एवं पद्मावती देवी की ९ फुट की प्रतिमाएँ, दोनों तरफ ४१/२ फुट के हाथी, सामने झरनों के साथ सुंदर उपवन, बच्चों के खेल-कूद के साधन के साथ बाल-उद्यान बनाया गया है।

नवरात्रि के समय नवरात्रि मेले का आयोजन किया गया, जिसमें करीब एक हजार जोड़ों द्वारा अलग-अलग पूजन एवं हवन विधान का आयोजन किया गया, तीनों दिन मिलाकर करीब २५,००० लोगों का आगमन हुआ।

श्री शक्तिपीठ धाम में काली सामग्री वर्जित है। जिस दिन धाम में प्रवेश करना हो, उस दिन सूर्योदय से जमीकंद, पान, गुटका, बीड़ी-सिगरेट का त्याग आवश्यक है जो इनका सेवन करते हैं, उन्हें उस दिन धाम में प्रवेश नहीं मिलता है।

इस धाम पर विशेष कर युवक वर्ग का आगमन अधिक होता है जो त्याग-प्रत्याख्यान आदि लेते हैं। धाम के सूत्रों ने बताया कि लगातार ५०० एकासणा एवं ५०० आयंबिल- (करीब डेढ़ वर्ष तक) के व्रत

कई लोगों ने धारण किए हैं। विभिन्न प्रांतों के भक्तों द्वारा इस धाम में इस चातुर्मास काल में अनेक मासखमण तपस्याओं की आराधना हुई है। इस धाम में स्थानीय अजैन बंधु भी बड़ी संख्या में आते हैं और इस धाम को विशेष मान्यता देते हैं तथा अजैन लोग भी बड़ी संख्या में मांसाहार का त्याग करते हुए शाकाहारी-अहिंसक बने हैं। हजारों लोगों ने पान-पराग, गुटका आदि सेवन का त्याग किया है। के.जी.एफ. में हजारों की संख्या में उपवास आदि के नियम लिए गये हैं।

यहाँ आने वाले भक्तगणों में अधिकांश लोग, चाहे ऊपर से देखने में अति प्रसन्न क्यों न हो, पर वे अपने भीतर पारिवारिक या आर्थिक या भूत-प्रेत आदि की कुछ न कुछ समस्याएं लेकर आते हैं। अपनी भिन्न-भिन्न समस्याओं को माँ के सम्मुख प्रकट करते हैं और उसके निवारण हेतु देवी पद्मावती से प्रार्थना करते हैं तथा गुरुजी की प्रेरणा से महामंत्र नवकार जाप, तपस्याएं एवं पूजा-पाठ आदि करते हैं। इनमें अनेक भक्तगणों का कहना है कि इस शक्तिपीठ के पावन स्थल पर आने से उनकी समस्याओं का निवारण हुआ है और उन्हें शांति, तृप्ति एवं आनन्द की अनुभूति हुई है।

इन्हीं वसंत गुरुजी के पावन सानिध्य में रविवार २३ मार्च २००३ को कोलकाता के दादावाड़ी में पार्श्व पद्मावती सर्व संकटहारी लक्ष्मीवृद्धि १०८ कुण्ड महाविधान हवन पूजन सुसम्पन्न हुआ। कोलकाता में यह अपने आप में एक अनूठा कार्यक्रम था।

आगामी अक्षय तृतीया रविवार ४ मई २००३ को कई जैन सन्तों-साधु-साध्वियों की उपस्थिति एवं निश्रा में कृष्णगिरि में निर्मित यात्री निवास, गौशाला रोड आदि का उद्घाटन होने जा रहा है। सम्पूर्ण कार्यक्रम भव्य रूप से मनाया जायेगा।

ब्रिटिश संग्रहालय में वाग्देवी नहीं बल्कि सरस्वती और अम्बिका की जैन प्रतिमायें— भोजशाला मामले में वहां कभी विराजी रही वाग्देवी प्रतिमा को लाने की हिन्दू जागरण मंच की मांग के बीच ब्रिटिश संग्रहालय लंदन की वेबसाइट कहती है कि वहां जैन देवी अम्बिका और सरस्वती की दो अलग-अलग प्रतिमाएं हैं। वाग्देवी प्रतिमा वहां होने की जानकारी इससे नहीं मिलती।

मौजूदा दोनों ही प्रतिमाएं मध्य भारत क्षेत्र की और ११वीं सदी के शुरुआती समय की बताई गई हैं। हिन्दू जागरण मंच द्वारा जिस प्रतिमा को वाग्देवी बताया जा रहा है वेबसाइट में वह अम्बिका देवी बताई गई हैं। राज्य सरकार भी इसे अम्बिका देवी बता रही हैं। इस विवाद में वहां प्रदर्शित सरस्वती प्रतिमा की ओर ध्यान नहीं दिया जा रहा जो इसी क्षेत्र और उसी समय की है। चर्चा में आई प्रतिमा के बारे में वेबसाइट में रोचक ऐतिहासिक तथ्य दिया गया है कि प्रतिमा पर इसके निर्माण की तिथि ईस्वी सन् १०३४-१०३५ और दानदाता का नाम दिया गया है। वेबसाइट इसके निर्माता का नाम तो नहीं बताती लेकिन इसे देने वाली एक महिला सोसा थी। संग्रहालय के रिकार्ड के मुताबिक इस महिला सोसा ने ही परमार शासक राजा भोज के नगर में वाग्देवी मां सरस्वती की प्रतिमा स्थापित करवाई। राजा भोज ने ईस्वी. सन् १००० से १०५५ तक मध्य भारत के बड़े क्षेत्र में धार को राजधानी बनाकर शासन किया। वेबसाइट कहती है कि सोसा ने बाद में कुछ जैन प्रतिमाएं भी मंगवाई और अंत में अम्बिका प्रतिमा की स्थापना करवाने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है जो इस संग्रहालय में प्रदर्शित है। अम्बिका प्रतिमा के बारे में वेबसाइट

में दी गई जानकारी के अनुसार मध्य भारत क्षेत्र की यह प्रतिमा वर्ष १०३४ की है। इसे जैन देवी बताते हुए कहा गया है कि हिन्दू और जैन धर्मावलंबी दोनों ही इसका पूजन करते हैं। संग्रहालय की वेबसाइट के भारतीय खंड में सरस्वती की एक प्रतिमा अलग दर्शायी गयी है। इसे भी मध्य भारत क्षेत्र का बताया गया है और इसकी समयावधि भी शुरुआती ११वीं सदी बताई गई है। इसमें मां सरस्वती को ज्ञान की देवी बताते हुए जैन धर्म का कहा गया है। सरस्वती प्रतिमा के बारे में वेबसाइट में यह भी कहा गया है कि यद्यपि हिन्दू देवी के रूप में इन्हें ज्यादा जाना जाता है। इस प्रतिमा में भी दाता और उसके परिवार का नाम है।

वेबसाइट के अनुसार जो अम्बिका देवी की प्रतिमा है उसे हिन्दू जागरण मंच वाग्देवी की प्रतिमा बताते हुए भारत सरकार से देश वापस लाने की मांग कर रहा है। हाल ही में भोजशाला मुक्ति आंदोलन के तेज होने के बाद यह मांग फिर जोर पकड़ रही है। यह मांग पहले भी होती रही है।

भोजशाला खोलने और वहां हिन्दुओं को पूजा की अनुमति देने की मांग के साथ मंच की मांग है कि वाग्देवी की प्रतिमा को लाकर भोजशाला में पुर्नप्रतिष्ठित किया जाए। एक विरोधाभासी तथ्य यह भी है कि वेबसाइट में अम्बिका देवी की प्रतिमा जहां संगमरमर की बताई गई है वहीं हिन्दू जागरण मंच का कहना है कि वाग्देवी प्रतिमा बहुमूल्य स्फटिक पत्थर की है।

साभार— श्वेताम्बर जैन

म्यूजियम का उद्घाटन— पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वर जी म. सा. की पावननिश्रा में श्री मोंहनखेड़ा तीर्थ मध्य प्रदेश में १५ जनवरी सन् २००३ को श्री राजराजेन्द्र जैन तीर्थ दर्शन (म्यूजियम) का उद्घाटन सम्पन्न हुआ। जैन संस्कृति के विविध विषयों के आधार पर इस म्यूजियम का विस्तार नौ खण्डों में है। प्रथम नवकार दर्शन खण्ड, द्वितीय तीर्थदर्शन खण्ड, तृतीय कर्म दर्शन खण्ड, चतुर्थ तत्वज्ञान खण्ड, पंचम श्रमण दर्शन खण्ड, षष्टम श्रमणी दर्शन खण्ड, सप्तम श्रमणोपासक दर्शन खण्ड, अष्टम श्राविका दर्शन खण्ड नवम् गुरु दर्शन खण्ड है ये नव खण्ड स्वस्तिक के आकार के भवन में बने हैं।

सेमिनार का आयोजन— 'Active contribution of Religion in Nations Development' विषय पर वीरायतन, राजगिरि एवं जैन एकादमी कोलकत्ता द्वारा सेमिनार दिनांक २ फरवरी २००३ को जी. डी. बिड़ला सभागार में आयोजित किया गया। प्रमुख वक्ता थे आचार्या श्री चन्दनाजी, स्वामी शिवमयानन्द जी (रामकृष्ण मिशन, बेलूड़मठ) डॉ० आर किदवई (सांसद एवं पूर्व राज्यपाल, बंगाल और बिहार) जस्टिस श्री रंगनाथ मिश्रा (सांसद, पूर्व मुख्य न्यायाधीश) और अवकाशप्राप्त रेवरेन्ड, पी.एस.पी.राजू (कोलकाता के बिशय)

भव्य प्रतिष्ठा समारोह— राष्ट्र सन्त आचार्य प्रवर श्री पद्म सागर सूरिजी महाराज की शुभ प्रेरणा एवं उनकी निश्रा में श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, श्री वर्धमान जैन श्वेताम्बर धनलक्ष्मी ट्रस्ट बोरीज की आज्ञा से धनलक्ष्मी बेन नवीनचन्द्र शाह के परिवार जनों

द्वारा बोरीज, गांधी नगर (गुजरात) में श्री वर्द्धमान स्वामी नूतन भव्य जिनमन्दिर की अंजनशलाका एवं भव्य प्रतिष्ठा महा महोत्सव दिनांक ७-२-२००३ को सम्पन्न हुआ। इस मन्दिर के शिखर की ऊँचाई अरिहंत परमात्मा के १०८ गुण प्रतीक १०८ फुट की है। लम्बाई २५० फुट है। मूलनायक श्री वर्द्धमान जिनेश्वर की मूर्ति ८१ इंच की ठोस पंच धातु की है। इतिहास प्रसिद्ध मुर्शिदाबाद के श्री जगतसेठ का कसौटी पत्थर का मंदिर भी यही स्थानान्तरित किया गया है।

प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न—परम पूज्य आचार्य देव श्री पद्मसागर सूरीश्वर जी महाराज के शुभ आशीर्वाद एवं निश्रा में श्री बुद्धि बिहार माउंट आबू में समोवसरण जिन मन्दिर की भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव दिनांक २४ से २८ फरवरी २००३ को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर योगनिष्ठ आचार्य श्री बुद्धिसागर सूरीश्वर जी महाराज साहब की कृति कर्मयोग के प्रथम भाग **'कर्मयोग'** पुस्तक का विमोचन किया गया।

श्री भंवरलाल नाहटा की पुण्य तिथि पर जारी डाकमोहर—पुरातत्ववेता, साहित्य रत्न एवं श्रावक शिरोमणि स्वर्गीय श्री भंवरलाल जी नाहटा की प्रथम पुण्य तिथि समारोह पर श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी विद्यालय के प्रागंण में श्री कल्याणमल लोढ़ा (पूर्व कुलपति, जोधपुर विश्वविद्यालय) की अध्यक्षता में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर पोस्ट मास्टर जनरल श्री एम. कुमार ने भारतीय डाक विभाग द्वारा उनके सम्मान में जारी की गयी विशेष डाक नेहर एवं विशेष आवरण को लोकार्पित किया। कोलकाता जी. पी. ओ. के फिलेटेलिक ब्युरो द्वारा विशेष आवरण उपलब्ध कराने हेतु विद्यालय प्रांगण में एक काउण्टर भी खोला गया है।

– रिद्धकरण बोथरा

शताब्दी समारोह— मोतीलाल बनारसी दास प्रकाशन संस्था का शताब्दी समारोह शनिवार २२ मार्च २००३ को श्रीपत सिंहानिया हॉल रोटरी सदन कोलकाता में आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि पश्चिम बंगाल के राज्यपाल महामहिम श्री श्री वीरेन्द्र जे. शाह एवं प्रमुख वक्ता श्री सीतानाथ गोस्वामी (भूतपूर्व प्रौ० यादवपुर विश्वविद्यालय) थे। समारोह की अध्यक्षता डॉ० रमारंजन मुखर्जी (पूर्व कुलपति तिरुपति संस्कृत विश्वविद्यालय, पूर्व उपकुलपति बर्द्धमान विश्वविद्यालय, रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय) ने की। इस अवसर पर प्रो० डॉ० सत्यरंजन बनर्जी (संपादक-जैन जरनल) को प्राकृत भाषा एवं जैन दर्शन में उनके सराहनीय योगदान के लिये विशिष्ट सम्मान स्वरूप स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया।

तीर्थ दर्शन का प्रकाशन— दक्षिण भारत की महानगरी चेन्नई में श्री जैन प्रार्थना मन्दिर ट्रस्ट ९६, वेपेरी हाई रोड, चेन्नई ६०० ००७ द्वारा तीर्थ दर्शन का प्रकाशन किया गया है। इसमें जिनेश्वर भगवन्तों के सभी कल्याणको, ऐतिहासिक स्थलों, पंचतीर्थों का समावेश है। सभी तीर्थों का इतिहास, मार्गदर्शन, फोन नम्बर, सुविधा आदि पूर्व विवरण दिये गये है। तीन खण्डों में प्रकाशित ग्रन्थ का मूल्य रु. १३००/- है।

जैन शिक्षण संस्थाओं का सम्मेलन सम्पन्न— जलगांव (महाराष्ट्र) दिनांक १२ मार्च सन् २००३ में जैन समाज की शिक्षण संस्थाओं के सम्मेलन का उद्घाटन प्रख्यात विधिवेत्ता डा. श्री लक्ष्मीमल सिंघवी ने किया। इस अवसर पर श्री दीपचंदजी जैन, श्री सुन्दरलालजी पटवा,

डा. डी. आर. मेहता, केन्द्रीय मंत्री दिलीप मेहता एवं श्री हजारीमल बांठिया तथा श्री ललित नाहटा उपस्थित थे। देश के विभिन्न अंचलों से करीब १५०० लोग विभिन्न संस्थाओं से जुड़े हुए आये थे।

फतेहपुर सीकरी में संग्रहालय निर्माण— दो वर्ष पूर्व आगरा के पुरातत्व अधीक्षक श्री धर्मवीर शर्मा द्वारा जब फतेहपुर सीकरी के छबीली बाई टीले पर उत्खनन कराया गया तो यहाँ का श्वेताम्बर जैन समाज संघ अध्यक्ष श्री अशोक जैन सी. ए. के नेतृत्व में काफी सक्रिय हुआ था। उत्खनन के दौरान यहाँ का संघ कई बार फतेहपुर सीकरी गया भी था। उस समय संघ अध्यक्ष श्री अशोक जैन सी. ए. के अथक प्रयास एवं भागदौड़ के कारण इन मूर्तियों के लिये वहाँ संग्रहांलय बनने का मार्ग प्रशस्त हुआ। अब शीघ्र ही इन सभी प्रतिमाओं के कला और सौंदर्य के दर्शन सुलभ हो जायेंगे। प्रतिमा के दर्शन करने वालों को इन कलाकृतियों से सम्बन्ध रखने वाले सभी महानपुरुषों के साथ-साथ ऐसे जिन शासन सेवकों के लिये भी नत-मस्तक होना पड़ेगा।

साभार— श्वेताम्बर जैन समाज

स्थापना दिवस समारोह— जैन विश्वभारती संस्थान लाडनूं का स्थापना दिवस समारोह दिनांक २० मार्च सन् २००३ को सम्पन्न हुआ। विशिष्ट अतिथि पद्मश्री महाबली सतपाल थे। सभा की अध्यक्षता श्रीमती सुधामही रघुनाथन (कुलपति जैन विश्वभारती संस्थान) द्वारा की गयी।

शिखर जी में प्रवेश— परमपूज्या मरुधर ज्योति श्री मणिप्रभा श्री जी म. सा. आदि ठाणा १० का बीस तीर्थंकरों के निर्वाणस्थली सम्मेतशिखर जी महातीर्थ में रविवार ६ अप्रैल २००३ को प्रातः ७ बजे पदार्पण हुआ । वर्षो से आपश्री की तीर्थ स्पर्शना की भावना फलीभूत हुई। इस मंगल प्रसंग पर कोलकाता से करीब ५०० श्रद्धालू आपके सामेला में उपस्थित थे। उपस्थित समूह के बीच आपश्री ने २००३ का चातुर्मास कोलकाता महानगर में करने की घोषणा की जिसका जयघोष के साथ स्वागत किया गया। सोने में सुगन्ध रूप करीब १५० तपस्वियों ने शाश्वती चैत्री ओलीजी की धूमधाम से आराधना कर पुण्योपार्जन किया।

आगानी बैशाख सुदी दशमी रविवार ११ मई २००३ को चरमतीर्थंकर शासनपति महावीर परमात्मा का केवलज्ञान दिवस आपश्री की निश्रा में ऋजुबालिका (बराकर) तीर्थ में मनाया जायेगा। कार्यक्रम का आयोजन जैन श्वेताम्बर सोसायटी द्वारा किया जा रहा है।

१२ मई २००३ को आपश्री बराकर से कोलकाता महानगर की ओर विहार करेंगी।

महेन्द्र कुमार पारख

संकलन

जैन धर्म में स्वामी वात्सल्य की वास्तविकता— जैन धर्म में स्वामी वात्सल्य का अपना एक अनोखा ढंग है। लेकिन अज्ञानता के कारण पश्चिम देशों की नकल ने अपने भारतीय संस्कृति को नाश के मार्ग पर लाकर खड़ा कर दिया है। आर्य संस्कृति का नाश करने की तैयार हो रही है, जो अन्न भारतीय संस्कृति में अन्नदेव समझा जाता था उसका बहुमान करते थे। विवेक से बैठकर मौन रखकर भोजन करते थे। लेकिन पाश्चात्य सभ्यता की नकल करके खड़े-खड़े चप्पल पहिनकर खाने लग गये। अन्नदेव का कितना भयंकर अपमान, जिसके परिणाम स्वरूप भूकम्प, तूफान, अतिवृष्टि, महामारी आदि प्राकृतिक उपद्रव होते हैं। जिससे मानवों को एवं अन्य जीवों को खूब परेशानी उठानी पड़ती है। वास्तविक सही रूप से स्वामी वात्सल्य का अर्थ यह है कि अपना स्वामी भाई गरीब है। आर्थिक स्थिति कमजोर है, परिवार का अच्छी तरह से पालन-पोषण नहीं कर सकता, दु:खी है। ऐसी स्थिति वाले स्वामी भाई की सब तरह से सहायता करनी। उनकी स्थिति अच्छी बनाना जिससे वो धर्म की आराधना कर सकें। खरा स्वामी वात्सल्य यही कहलाता है।

दूसरे नम्बर पर अपने स्वामी भाईयों को इकट्ठा करके प्रेम पूर्वक नीचे बैठाकर आदर पूर्वक भोजन कराना। स्वामी भक्ति सच्चे दिल से, उच्च भावना से की जाय तो तीर्थंकर नाम कर्म का बंध हो सकता है। खड़े-खड़े बूट, चप्पल पहिनकर भोजन खिलाना कोई स्वामी वात्सल्य नहीं कहलाता है। यह तो एक प्रकार से पार्टी कहलाती है, विदेशों में पाश्चात्य देशों का यह अज्ञानता भरा कार्य है। भारतीय संस्कृति में यह ऐसा रिवाज नहीं है। इसलिये सोच समझकर नकल करनी चाहिये एवं नकल में अकल भी लगानी चाहिये कहीं अपने धर्म के विरुद्ध तो नहीं चल रहा हूँ। ऐसा सोचें! एवं धर्म के अनुसार व्यवहार करना चाहिये।

—मुनिश्री वीररतन विजयजी

—साभार श्वेताम्बर जैन

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: (O) 2247-6874, (Resi) 2246-7707

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071
Ph: 2288 1565 / 1603

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box:16127,
Kolkata -700 017
Ph: (033) 2240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 2240 0098, 2247 1833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

MAHASINGH RAI MEGH RAJ BAHADUR
Goalpara, Assam

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Kolkata - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 2235 0623, (Resi) 2239-6823

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road,
Kolkata - 700 007
Ph: 2238-8677/1647, 2239-6097

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2348-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Ph: (O) 2282-4649, (Resi) 2247-2670

ASHOK KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata, Ph: 2464-1186,

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor,
24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071
Ph: 2247-7450/5264

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2238-4755, (Resi) 2238-0817

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in
sona@cal3.vsnl.net.in

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2233-1766, 2238-8846
Mobile: 9831028566
Resi : 2355-9641/7196

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007,
Ph: 2239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203 /1 M. G. Road, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2238-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021
Office: Tobacco House 1/2, Old Court House Corner
Kolkata -700 001, Ph: 2220-2389/3570/3569

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane,
Kolkata - 700 026, Phone : 2476-1533

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East
Kolkata - 700 069

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Phone : (Off) 2247-7880, 2247-8663
(Res) 2247-8128, 2247-9546

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 2249-0103

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 2235-2076, 2235-5701

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

SPACE & WINGS
Travel Agents
Domestic & International Airlines
Phone : 2242-7806/8835/5852
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Kolkata - 700 001 Fax : 2242 8831
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Phone : 001-217-355-0174/0187
e-mail : doogar@uiuc.edu

SUBHASH & SUVRA KHERA
6116, Prairie Circle
Mississauga LS N5Y2
Canada
Phone : 905-785-1243

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

अ angan
Rajasthan Village Theme Resturant at Swabhumi
89/c, Narkeldanga Main Road, Kolkata - 700 054
Phone : 2359 2031, e-mail : www.jiggis.com

PRITAM ELECTRIC & ELECTRONIC PVT. LTD.
Shop No. G- 136, 22, Rabindra Sarani,
Kolkata - 700 073, Phone : 2236-2210

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

RABINDRA SINGH NAHAR
40/4A, Chakraberia South, Kolkata - 700 020
Phone : (O) 2244-1309, (R) 2475-7458

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं

WITH BEST WISHES

VEEKEY ELECTRONICS
Madhur Electronics, 29/1B, Chandani Chock
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140
(Resi) 2352-8387/9885

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Kolkata - 700 007
Phone : (Shop) 2242-4483/9181, (O) 2238-1396/1871
Fax : 2231-2151, 2666-6013

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2220-5229/5121

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2230-1329, 2232-1033
Fax : 91-33-2302413

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C., Kolkata - 700 019
Phone : 2287-0448

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. SHREE SILK STORE
House of :
Banarasi Sarees & Velvet Articles etc.
P-25, Kalakar Street, Jain Katra
Kolkata - 700 007
Phone: 2268 2671, 666 4422

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

M/S. B.C. JAIN JEWELLER'S (PVT.) LTD.
Govt. approved valuer for Jewellery.
Director: Bimal Chand Jain/Vikash Jain/Vivek Jain
39, Burtolla Street, Kolkata - 700 007

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane, Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2239-6241/2950 (O) 2239-0581

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone: 2232 3876

SHRI MANILAL RAJENDRA KUMAR JAIN (DUSAJ)
Dealers : Diamond, Precious Stones, Semi Stones &
Readymade Ornaments,
Phone: 2237 5869/6476
(Mobile): 98301017091, 9830142191

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
Burtala, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2238-0900 (M) 9830094325

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone: (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985,
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadalia@usa.net

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre
19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 5342535
Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

WHILE PURCHASING HEASIAN, SACKING, YARN AND DECORATIVE FURNISHING FABRICS & OTHER JUTE PRODUCTS, PLEASE INSIST ON QUALITY PRODUCTION.

We are, always ready to meet the Exact type of your requirement.

AUCKLAND INTERNATIONAL LTD.

(UNIT : AUCKLAND JUTE MILLS)

"KANKARIA ESTATE"

6, Little Russel Street,
Kolkata - 700 071

A RECOGNISED EXPORT HOUSE

Cable : SWANAUCK, KOLKATA
Telex : 212396 AUCK IN
Codes : BENTLEY'S SECOND
Phone: 22479921/9720,22402683

Registered Office &
'JUTE MILL' at jagatdal 24-Parganas
BHATPARA 81-2757/2758/2038

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan , Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia,

卐

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin - 742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No.: 53232
Cal. Phone: No.: 033 2230 0432, 2522-1580

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbus would have feared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016

Tel : 2229 8228. Fax : 2229 3882, 2245 7562

e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road.
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50⁰ C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of achcivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL" 2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591 2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN 2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 2514-4496, 2513-1086, 2513-2203
Fax: 91-011-5131184
e-mail: laxmanjariwala@gems.vsnl.net.in

With Best Compliments..... ?

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 2229-7346/4553, 2226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

In

Loving Memory of their parents

Late, Shree Phool chandji Kharad

&

Late, Smt. Narangi Devi Kharad

From :-

M/s Phool Chand Kharad & Sons

21, Kali Krishna Tagore Street

Kolkata - 700 007

Phone : 2233-1609, 2239-8628

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

अहिंसा ही परमफल है, परममित्र है, परम सुख है।
अहिंसा कायरों का नहीं वीरों का अस्त्र है।

卐

arcadia shipping limited

We Own & Operator tramp service on
-M.V.ARCADIA PROGRESS (35224 DWT)
Besides Owing & Operating 8 Self Propeled + 1
Dumb Barges
of between 550-1250 DWT.

We are Associates/General Agents in India for:
Winco Maritime Limited, London
-Puyvast Chartering BV., The Netherlands
-National Petroleum Construction Co., Abu Dhabi
******
We are agents at Mangalore for:
The Shipping Corporation of India Ltd.
(The Indian National Line)
******
Regd. & head Office:
222, Tulsiani Chambers Nariman point,
Mumbai-400 021.
Tel: 2831540/49, 2020416/418/2822765.
Fax: 2872664.
Tlx: 86567 ASPL IN / 83059 CONT IN, / CABLE:
SHIPONTIME
E.Mail: vns@arcadiashipping.com

******

Offices at all major Indian Ports & New Delhi & Bangalore.

M.M & P.O./W.B./R.N.P.-45/2003
Vol. XXVII, No. 1 TITTHAYARA April 2003
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचानी चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225